स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

# अंकुर

## राजभाषा के लिए समर्पित अर्धवार्षिक गृहपत्रिका

खंड-1 अंक-1 जनवरी- जून 2017

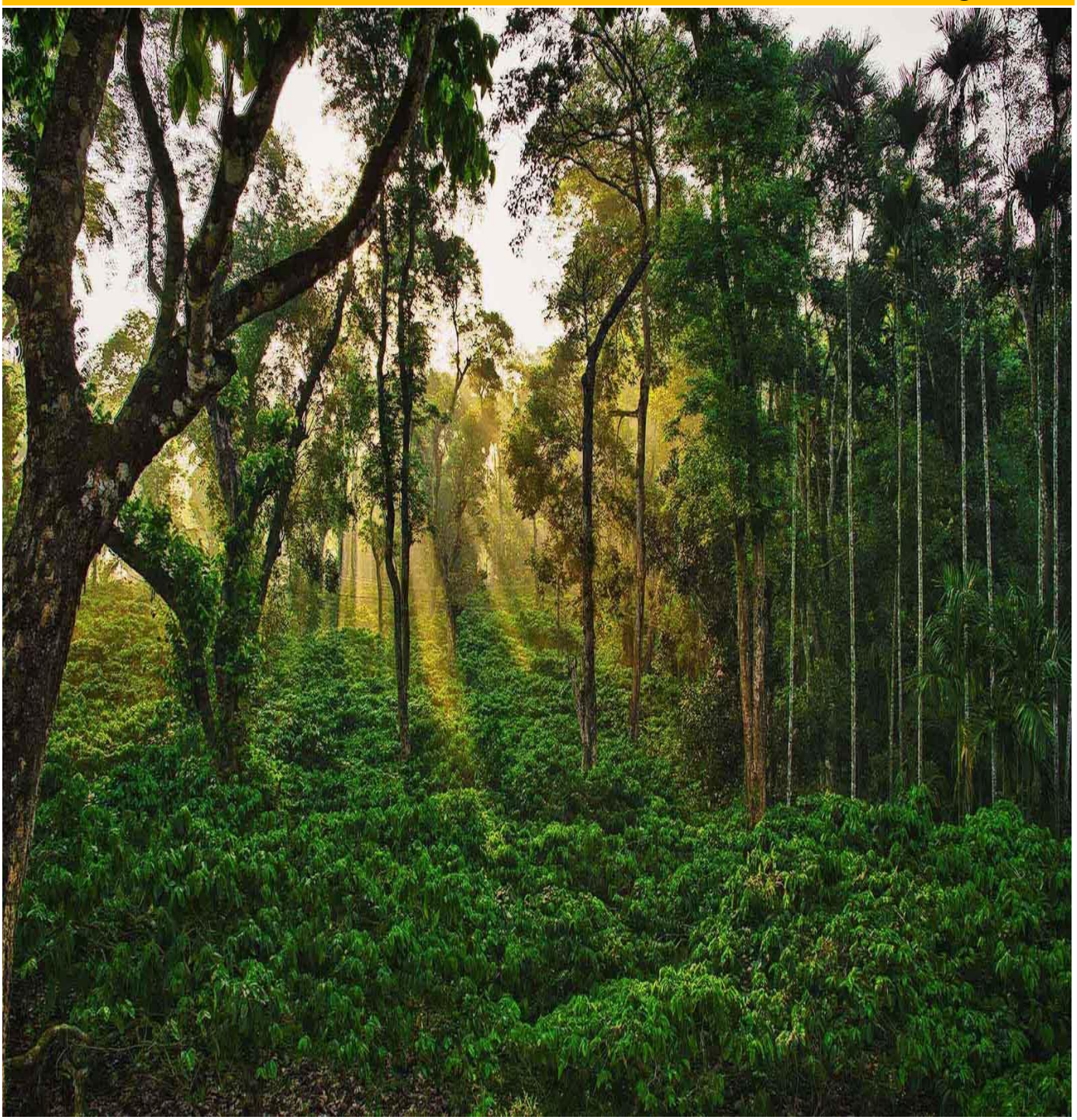

कॉफ़ी बोर्ड
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
बेंगलूरु

अण्णामलैस

अरकु वैली

बाबाबुडानगिरीस

बिलिगिरीस

ब्रह्मपुत्रा

वयनाड

चिकमगलूर

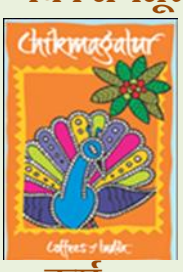


# भारत की कॉफ़ियाँ

ट्रावनकूर

कूर्ग

शेवरॉइस

मंजराबाद

पलनीस

रोबस्टा कापी रोयाल

मानसूंड मलबार

मैसूर नग्गेट्स

नीलगिरीस

**देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भारत की राजभाषा होगी।**

अनुच्छेद 343 (1) – भारतीय संविधान

कॉफ़ी बोर्ड, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, बेंगलूरु - 560 001. वेबसाइट: www.indiacoffee.org

# अंकुर


**संरक्षक**
श्री श्रीवत्स कृष्णा, आई ए एस
सचिव, कॉफ़ी बोर्ड

**मुख्य संपादक**
डॉ आरती दिवान गुप्ता, आई डी ए एस
वित्त निदेशक, कॉफ़ी बोर्ड

**संपादक**
एम.पी.दामोदरन
**सहयोगी संपादक**
रंजनी गजेंद्र
उषा
सी. मादप्पा
अनुश्री.पी.एस.



पत्रिका में अभिव्यक्त विचार एवं अभिमत से कॉफ़ी बोर्ड का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
यह अंक केवल बोर्ड के आंतरिक परिचालन के लिए है, बिक्री के लिए नहीं है|
THIS ISSUE IS ONLY FOR INTERNAL CIRCULATION OF THE BOARD, NOT FOR SALE.

**राजभाषा के लिए समर्पित अर्धवार्षिक गृहपत्रिका**

खंड-1 अंक-1 जनवरी- जून 2017


**आंतरिक पन्नों पर**


सचिव की तर्जनी से
वित्त निदेशक की कलम से
अनुसंधान निदेशक की कलम से
संपादकीय

**राजभाषा सुमन**
कॉफ़ी बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट
अंतर-कार्यालयीन भाषण प्रतियोगिता – एक रिपोर्ट
हिंदी पखवाड़ा समारोह-2016
माइक्रोसॉफ़्ट एक्सल पर विशेष वक्तव्य
तस्वीर देखें कविता लिखें प्रतियोगिता- एक रिपोर्ट

**कविता कुंज**
वाह रे कॉफ़ी !
प्राकृतिक वादियों में जीवन
मोरनी की नाच
भारत की कॉफ़ी
झरने की व्यथा
मनमोहक मोर
पंख बिसराए मोर

**निबंध सौरभ**
कॉफ़ी – एक स्वास्थ्यवर्धक पेय
एक सुनहरा पल-ज़िंदगी का
पूर्वोत्तर क्षेत्र में कॉफ़ी का विकास
जीवन के अनमोल वचन
मुन्नार- प्रकृति का अद्भुत वरदान

**कहानी तरंग**
**चित्र चारुता**
**भाषा विविधा**



ಕಾಫಿ ಬೋರ್ಡ್
ವಾಣಿಜ್ಯ ಮತ್ತು ಕೈಗಾರಿಕೆ ಸಚಿವಾಲಯ
ಡಾ.ಬೀ.ಆರ್.ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ವೀಧಿ
ಬೆಂಗಳೂರು - 560 001

कॉफ़ी बोर्ड
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
डॉ. बी. आर. अंबेडकर वीथी,
बेंगलूरु – 560 001

COFFEE BOARD
Ministry of Commerce & Industry
Dr.B.R.Ambedkar Veedhi,
Bengaluru -560 001
website: www.indiacoffee.org

# सी सी आर आई में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ

श्रीवत्स कृष्णा, आई ए एस
सचिव, कॉफ़ी बोर्ड

## सचिव की तर्जनी से .....

मेरे प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 'अंकुर' नामक हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। भाषा अपनी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है तथा राजभाषा हिंदी का साहित्य भारतीय संस्कृति का दर्पण है। हमारे संविधान की राजभाषा हिंदी का प्रगतिशील कार्यान्वयन बोर्ड के प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी का कर्तव्य है।

इस पत्रिका के प्रकाशन के द्वारा बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों की सर्जनात्मक प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त होगा। इसके साथ ही यह पत्रिका कार्मिकों को अपने दैनिक कामकाज में हिंदी के अधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस प्रयास से कॉफ़ी बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में सफल कदम होगा।

हिंदीतर क्षेत्रों में इस प्रकार के प्रयास नि:संदेह सराहनीय है। इस प्रकार के प्रयासों से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अत्यधिक वृद्धि होगी।

इस अवसर पर, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रयासरत सभी संबंधित कार्मिकों को हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ।

'अंकुर' पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ

(श्रीवत्स कृष्णा)

## सी सी आर आई में " माइक्रोसॉफ़्ट एक्सल " पर आयोजित सेमिनार की झलकियाँ
## (20-02-2017)

हिंदी बोलिए

हिंदी सुनिए

हिंदी लिखिए

डॉ आरती दिवान गुप्ता, आई डी ए एस वित्त
निदेशक, कॉफ़ी बोर्ड

## वित्त निदेशक की कलम से.....

प्रिय साथियों,

जैसाकि आप सभी जानते हैं कि कॉफ़ी बोर्ड भारतीय कॉफ़ी के संवर्धन, विस्तारण व अनुसंधान के क्षेत्र में सफल प्रयासों के द्वारा आगे बढ़ रहा है। किसी भी गृह पत्रिका द्वारा उस कार्यालय में कार्यरत कार्मिक अपनी रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन कर सकते हैं। इस पत्रिका में भी कॉफ़ी बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों की कलात्मक प्रतिभा की झलक मिलती है। इस पत्रिका के प्रकाशन द्वारा बोर्ड के राजभाषा कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

इस पत्रिका द्वारा सभी दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार का भी कार्य किया जा रहा है, जो अत्यंत सराहनीय है। मुझे पूरी उम्मीद है कि कॉफ़ी बोर्ड में राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन के लिए जरूर यह प्रयास सहायक सिद्ध होगा।

इस पत्रिका के संपादन व लेखन कार्य से जुड़े सभी कार्मिक एवं रचनाकारों को धन्यवाद के साथ पत्रिका सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक बधाई।

शुभ कामनाओं के साथ

आरती

(डॉ आरती दीवान गुप्ता)

# मुख्य कार्यालय एवं अन्य उप-कार्यालयों में आयोजित कार्यशालाओं की झलकियाँ

डॉ.वाई.रघुरामुलु
अनुसंधान निदेशक
कॉफ़ी बोर्ड

## निदेशक की कलम से .....

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय द्वारा नई गृह पत्रिका 'अंकुर' प्रकाशित किया जा रहा है। इससे न केवल बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए सहायता प्राप्त होगी, बल्कि अपने कार्मिकों को रचनाओं के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अवसर प्राप्त होगा।

इस पत्रिका में संस्कृत के साथ दक्षिण भारत की कन्नड, मलयालम, तमिल, तेलुगु जैसी विभिन्न भाषाओं की रचनाओं को भी सम्मिलित करने का प्रयास भारतीय संस्कृति की विविधता की झलकियाँ प्रस्तुत करता है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से बोर्ड के कार्मिकों में हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के प्रकाशन से संबद्ध संपादक मंडल एवं सभी संबंधित कार्मिकों के द्वारा किए गए प्रयासों के लिए विशेष रूप से सराहना चाहता हूँ।

हार्दिक शुभ कामनाएँ सहित,

वाई. रघुरामुलु

(डॉ वाई. रघुरामुलु)

## नवदशक की आभा में प्रशोभित सी सी आर आई

केंद्रीय कॉफ़ी अनुसंधान संस्थान (सी सी आर आई), आधुनिक कॉफ़ी अनुसंधान की मुख्य धारा के क्षेत्रों की अग्रणी संस्था है जिसने सन् 2015 में अपने नब्बे वर्ष पूरे किए हैं। सी सी आर आई ने भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वैज्ञानिक अनुसंधान में कार्यरत संस्था के रूप में मान्यता प्राप्त की है। केंद्रीय कॉफ़ी अनुसंधान संस्थान, पौधा संवर्धन व आनुवंशिकी, कॉफ़ी सस्य-विज्ञान, मृदा विज्ञान व कृषि रसायन-विज्ञान, पौधा कायिकी, रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, फसलोत्तर प्रौद्योगिकी, कॉफ़ी जैव-प्रौद्योगिकी तथा कॉफ़ी गुणता जैसे विभिन्न विषयों के गहन एवं प्रगत अनुसंधान में कार्यरत है।

प्रधान कैंपस में स्थित अनुसंधान प्रभागों के अलावा, मैसूर में स्थित अनन्य ऊतक संवर्धन व जैव - प्रौद्योगिकी प्रभाग द्वारा उच्च स्तरीय फसल एवं कीटाणु व रोग-प्रतिरोधी प्रभेदों के विकास के लिए परंपरागत संवर्धन कार्यक्रमों के समर्थन/प्रोत्साहन के लिए जैव-प्रद्योगिकी एवं आणविक जैविकी का अध्ययन व अनुसंधान आयोजित किए जाते हैं । कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में स्थित गुणता नियंत्रण प्रभाग द्वारा कॉफ़ी की गुणता के प्रोन्नयन के लिए विभिन्न अनुसंधान विभागों को सक्रिय सहयोग प्रदान किया जाता है।

केंद्रीय कॉफ़ी अनुसंधान संस्थान में अनुसंधान कार्य संपन्न करने के लिए तकनीकी स्टाफ़ के समर्थन के साथ लगभग 130 वैज्ञानिक कार्यरत हैं। यह केंद्र पौधा संवर्धन , आणविक जैविकी, मृदा विज्ञान, पौधा जैवरसायन विज्ञान, कीटाणु व रोग संबंधी अनुसंधान, फसलोत्तर प्रौद्योगिकी, जल प्रदूषण एवं क्षेत्र अनुप्रयोग से संबंधित अन्य कार्य आदि चयनित क्षेत्रों के उच्च स्तरीय मूलभूत तथा अनुप्रयुक्त अनुसंधान के क्रियान्वयन के ध्येय को आगे बढ़ा रहा है। सी सी आर आई में अन्य बागान एवं कृषीय उपजों से संबंधित पत्रिकाओं के अलावा सुसज्जित आधुनिक प्रयोगशाला सुविधाएँ तथा विभिन्न विषयों से संबंधित अनेक पुस्तकों से संग्रहीत केंद्रीकृत पुस्तकालय है।

इसके अतिरिक्त यहाँ कॉफ़ी बोर्ड के कॉफ़ी उपजकर्ता, महाजन, उद्यान-कृषक, संपदा प्रबंधक, पर्यवेक्षकीय कार्मिक, विस्तारण अधिकारी आदि को प्रशिक्षण देने के लिए सुस्थापित प्रशिक्षण अनुभाग है। प्रशिक्षण अनुभाग यू एन डी पी एवं एफ़ ए ओ के नाम से जाना जाता है जहाँ विदेशी नागरिकों को भी कॉफ़ी संवर्धन के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाता है।

एम.पी.दामोदरन
उप निदेशक (रा.भा)
कॉफ़ी बोर्ड

# संपादकीय

प्रिय साथियों,

कॉफ़ी बोर्ड की गृह पत्रिका 'अंकुर' आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिकाएँ प्रत्येक नागरिक की सर्जनात्मक क्षमता प्रकट करने का सशक्त माध्यम है। कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों पर स्थित उप-कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास ही इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य ध्येय है।

बोर्ड के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों तथा योजनाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना भी राजभाषा गृह पत्रिका का उद्देश्य है। इस पत्रिका द्वारा कॉफ़ी बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों का विवरण भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

दक्षिण भारत कन्नड़, मलयालम, तमिल एवं तेलुगु जैसे द्रविड परिवार की भाषाओं की रंगभूमि है। हिंदी भाषी क्षेत्र से दूर रहने के बावजूद भी यहाँ के लोगों में राजभाषा से अटूट संबंध है। भारत की सभी भाषाएँ भारत की अस्मिता का प्रतीक है। अत: इस पत्रिका में दक्षिण भारतीय भाषाओं को सम्मिलित किया गया है।

मैं इस अवसर पर पत्रिका को साकार बनाने के लिए आवश्यक सुझाव प्रदान करने वाले वरिष्ठ अधिकारी गण एवं अपनी बहुमूल्य रचना द्वारा सहयोग प्रदत्त रचनाकारों एवं राजभाषा स्कंध के सहयोगियों को अपना आभार प्रकट करता हूँ।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह 'अंकुर' फल-फूलकर अपनी महक द्वारा कॉफ़ी बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को प्रगति की ओर ले जाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सादर ! जय हिंद !! जय हिंदी !!!

(एम.पी.दामोदरन)
उप निदेशक (राजभाषा)

## मुख्य कार्यालय,बेंगलूरु में हिंदी पखवाडा समारोह की झलकियाँ

मंचासीन वरिष्ठ अधिकारी गण

वित्त निदेशक के करकमलों से पुरस्कार लेते हुए प्रतिभागी

# राजभाषा सुमन

" कोई भी देश अपनी भाषा व संस्कृति की उपेक्षा करके उन्नति नहीं पा सकता "

डॉ.राजेंद्र प्रसाद

# वर्ष 2016-17 के दौरान कॉफ़ी बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन संबधी गतिविधियाँ

- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित लक्ष्य जैसे राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) एवं नियम 5 का अनुपालन, मूल पत्राचार व टिप्पण संबंधी निर्धारित लक्ष्य, कार्यशालाओं व तिमाही बैठकों का आयोजन, तिमाही रिपोर्टों का ऑनलाइन प्रेषण आदि प्राप्त किया गया है।
- बोर्ड के मुख्य कार्यालय में प्रत्येक तिमाही के दौरान हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया तथा वर्ष के दौरान इन कार्यशालाओं में कुल 60 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा हिंदी के क्षेत्र में विख्यात वरिष्ठ व्यक्तियों को आमंत्रित करते हुए को बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए 03 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। केंद्रीय कॉफ़ी अनुसंधान संस्थान में दिनांक 15.07.2016 को विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 95 अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 24.11.2016 को ऊतक संवर्धन केंद्र, मैसूरू एवं 01.12.2016 को आर सी आर एस, थांडिगुडी तथा 02.12.2016 को उप निदेशक (विस्तारण) का कार्यालय,कोयंबत्तूर में हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।
- बोर्ड द्वारा हिंदी में अपना मूल कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए क्रियान्वित प्रोत्साहन योजना इस वर्ष भी जारी रखा। इस योजना के अनुसार बोर्ड के कोई भी अधिकारी/कर्मचारी फ़ाइल/रजिस्टर/कंप्यूटर पर अपना मूल कार्य करने पर प्रत्येक वर्ष के दौरान 5000 शब्द के लिए ₹2500/- की राशि पाने के लिए हकदार होते हैं। संबंधित वर्ष के दौरान 08 अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस योजना में भाग लिया तथा उन्हें पुरस्कृत किया गया। राजभाषा विभाग के द्वारा दिए गए निदेशानुसार आगामी वर्ष के लिए इस योजना की राशि ₹2500/- से ₹5000/- तक बढ़ाई गई है।
- राजभाषा विभाग के दिशा-निदेशानुसार मुख्य कार्यालय के अनुभागों तथा विभिन्न उप-कार्यालय जैसे कि चुंडेल, कल्पट्टा, चेट्टल्ली, मडिकेरी, चिक्कमगलूरु, सी सी आर आई, मैसूरु, थांडिगुडी, कोयंबत्तूरु, विशाखपट्टनम स्थित उप- कार्यालयों में निरीक्षण किया गया तथा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।
- भारतीय स्वतंत्रता की स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य में सन् 1997 में कॉफ़ी बोर्ड द्वारा चल वैजयंती योजना प्रारंभ की गई थी, जिसके अधीन बोर्ड द्वारा प्रति वर्ष बेंगलूरु शहर में स्थित विभिन्न केंद्र सरकार के कार्यालयों/सार्वजनिक उपक्रमों में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए अंतर-कार्यालयीन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करता आ रहा है। विचाराधीन वर्ष के दौरान भी 10 अगस्त 2016 को यह प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस बार वायुसेना स्टेशन, जालहल्ली, बेंगलूरु ने चल वैजयंती जीती थी। व्यक्तिगत प्रदर्शन के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार क्रमशः श्री जे डब्ल्यू ओ.अफ़रोज़ अख़्तर, ए.एफ.एस.ओ, वायु सेना स्टेशन, जालहल्ली; श्रीमती राजलक्ष्मी ए.आर, उप महा प्रबंधक, क्यू .एस, बी.एच.ई.एल; श्रीमती राजलक्ष्मी एस, हेलिकॉप्टर प्रभाग, एच.ए.एल; श्रीमती वी. हंसवेणि, एच.पी.सी.एल तथा डॉ. हरलापुर, एन.एस.एस.ओ, केंद्रीय रेशम बोर्ड को प्राप्त हुए।
- बोर्ड के मुख्य कार्यालय में 01 से 14 सितंबर 2016 तक हिंदी पखवाडे का आयोजन किया गया तथा पखवाड़े के दौरान कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 14 सितंबर 2016 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह में पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। 10 अगस्त 2016 को आयोजित भाषण प्रतियोगिता के शील्ड प्राप्त संगठन एवं व्यक्तिगत पुरस्कार विजेताओं को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

- तकनीकी विषयों पर विशेष व्याख्यान के अधीन **"माइक्रो सॉफ्ट एक्सेल"** पर दिनांक 20.10.2016 को कार्यालय के नीलामी कक्ष में विशेष व्याख्यान आयोजन किया गया। श्री सुधाकर कुम्ब्ले, मुख्य प्रबंधक (सेवा निवृत्त), विजया बैंक अतिथि वक्ता के रूप में पधारे।
- नराकास द्वारा आयोजित दोनों अर्धवार्षिक बैठकों में राजभाषा स्कंध से वरिष्ठ अधिकारी एवं प्रतिनिधि उपस्थित हुए।
- नराकास (कार्यालय), बेंगलूरु के तत्वावधान में अपने सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित संयुक्त हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दिनांक 07.11.2016 को **"तस्वीर देखें कविता लिखें"** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु बेंगलूरू स्थित विभिन्न सदस्य कार्यालयों में से 26 प्रतिभागी उपस्थित हुए।
- केंद्रीय कॉफ़ी अनुसंधान संस्थान, बालेहोन्नूर में दिनांक 20.12.2016 से 22.12.2016 तक राजभाषा स्कंध के श्रीमती अनुश्री पी.एस, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने हिंदी एवं कन्नड़ भाषा में त्रिदिवसीय यूनिकोड प्रशिक्षण का संचालन किया जिसमें 19 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- दिनांक 21.12.2016 को हैदराबाद में आयोजित दक्षिण-पश्चिमी एवं दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा स्कंध के हिंदी अनुवादक श्रीमती रंजनी गजेंद्र एवं सुश्री उषा ने कॉफ़ी बोर्ड का प्रतिनिधित्व किया।
- दिनांक 27.12.2016 को इसरो में **"अंतरिक्ष विभाग में तकनीकी साहित्य एवं गतिविधियाँ"** विषय पर आयोजित एक राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में राजभाषा स्कंध के उप निदेशक श्री एम.पी.दामोदरन उपस्थित हुए।
- दिनांक 10.12.2017 के बी ई एल के निगमित कार्यालय में आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर **"राजभाषा कार्यान्वयन, चुनौतियां एवं उसके समाधान"** विषय पर बोर्ड के उप निदेशक (रा.भा) व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसरो मुख्यालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह में राजभाषा स्कंध के श्रीमती अनुश्री पी.एस, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक बोर्ड का प्रतिनिधित्व किया।
- वर्ष के दौरान कॉफ़ी बोर्ड की वेबसाइट का हिंदी संस्करण जनसाधारण के लिए होस्ट किया गया है।
- कॉफ़ी बोर्ड की संपूर्ण गाइड **"कॉफ़ी गाइड"** का हिंदी अनुवाद पूरा कर लिया गया है। प्रकाशन का कार्य प्रगति के पथ पर है।

**भारत की जितनी भी भाषाएँ हैं, वे हमारी भाषाएँ हैं, वे हमारी अपनी हैं, उनमें हमारी आत्मा का प्रतिबिंब है, वे हमारी आत्माभिव्यक्ति के साधन हैं। उनमें कोई छोटी-बड़ी नहीं है।**

**अटल बिहारी बाजपेयी**

**हिंदी को अपनाए बिना भारत की एकता संभव नहीं है।**

**आचार्य कृपलानी**

**कर्तव्य कभी आग तथा पानी की परवाह नहीं करता।**

**प्रेमचंद**

## अंतर-कार्यालयीन हिंदी भाषण प्रतियोगिता – एक रिपोर्ट

भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में प्रवर्तित अंतर-कार्यालयीन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दिनांक 10.08.2016 को किया गया। श्री एम. ए प्रकाश, वरिष्ठ आशुलिपिक, के प्रार्थना-गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्री एम. पी दामोदरन, उप निदेशक (रा.भा), ने सर्वप्रथम सभागार में उपस्थित निर्णायक गण, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया।

उप निदेशक (रा.भा), ने निर्णायकों के रूप में पधारे हुए ड़ॉ सईदा अफ़ज़ल उन्नीसा, मुख्य प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक; श्रीमती सुलेखा मोहन, उप महा प्रबंधक (सेवा निवृत्त), केनरा बैंक तथा डॉ. घेवर राम चौधरी, डेयर, डी.आर.डी.ओ का संक्षिप्त परिचय दिया।

बेंगलूरु स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों से 22 प्रतिभागी इस प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए तथा हिंदीतर भाषी होते हुए भी सभी प्रतिभागियों ने सरल एवं सहज भाषा में अपने विचार प्रकट किए। इस प्रतियोगिता की चल वैजयंति बेंगलूरु के जालहल्ली स्थित वायु सेना स्टेशन ने जीती। प्रतियोगिता के व्यक्तिगत प्रथम पुरस्कार, द्वितीय पुरस्कार व तृतीय पुरस्कार तथा दो सांत्वना पुरस्कार क्रमशः श्री जे डब्ल्यू ओ. अफ़रोज़ अख़्तर, ए.एफ.एस.ओ,वायु सेना स्टेशन, जालहल्ली; श्रीमती राजलक्ष्मी ए. आर, उप महा प्रबंधक, क्यू .एस, बी एच ई एल, श्रीमती राजलक्ष्मी एस, हेलीकॉप्टर कॉम्पलेक्स, एच ए एल; श्रीमती वी. हंसवेणि, एच पी सी एल तथा डॉ. हरलापुर, एन एस एस ओ, केंद्रीय रेशम बोर्ड को प्राप्त हुए।

सुश्री उषा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सुचारू रूप से संपन्न हुआ। श्रीमती रंजनी गजेंद्र, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने कार्यक्रम का संचालन किया।

**जिस प्रकार दूसरों के अधिकार को सम्मान देना मानव का कर्तव्य है उसी प्रकार अपना सम्मान रखना भी उसका कर्तव्य है।**

**रवींद्रनाथ ठाकुर**

**मस्तिष्क की भाषा सभी नहीं समझ सकते, परंतु हृदय की भाषा ब्रह्मा से लेकर घास के तिनके तक समझ सकता है।**

**स्वामी विवेकानंद**

**राष्ट्रीय जागृति मातृभाषा के प्रचार के बिना नहीं हो सकती। मातृभाषा के द्वारा कला-कौशल और साहित्य को पुनर्जीवित करना देश के शुभचिंतकों का कर्तव्य है।**

**राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन**

# कॉफ़ी बोर्ड के प्रधान कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा संपन्न

कॉफ़ी बोर्ड के प्रधान कार्यालय बेंगलूरु में दिनांक 01.09.2016 से 14.09.2016 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 14 सितंबर 2016 को पूर्वाह्न में 11.30 बजे पखवाड़े के समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर बीईएल, बेंगलूरु संकुल के निदेशक महोदय श्री. गिरीश कुमार मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। कॉफ़ी बोर्ड के प्रधान कार्यालय के वित्त निदेशक श्रीमती आरती दीवान गुप्ता ने हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह की अध्यक्षता की तथा वायु सेना कार्यालय, जालहल्ली के विंग कमांडर श्री राजीव तिवारी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सर्वप्रथम बोर्ड के उप निदेशक (राजभाषा) श्री एम.पी.दामोदरन ने मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य पदाधिकारियों तथा सभागार में उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत किया। तत्पश्चात सुश्री उषा, हिंदी अनुवादक ने माननीय गृह मंत्रिजी के संदेश का वाचन किया। उसके बाद कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा श्रीमती रंजिनी गजेंद्र, हिंदी अनुवादक ने मुख्य अतिथि का परिचय कराया। समारोह के अध्यक्ष श्रीमती आरती दीवान गुप्ता, आई डी ए एस महोदया ने अपने संबोधन के दौरान कार्यालयीन काम में हिंदी के प्रयोग का महत्व तथा कोफ़ी बोर्ड में राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला। आदरणीय मुख्य अतिथि श्री गिरीश कुमार जी ने अपने आशीर्वचनों के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रयोग के साथ-साथ मातृभाषा तथा भारतीय संस्कृति के महत्व की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया। मुख्य अतिथि एवं वित्त निदेशक महोदया के करकमलों द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। इस समारोह के दौरान कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं बोर्ड के वित्त निदेशक ने कॉफ़ी बोर्ड द्वारा 10 अगस्त 2016 को भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के स्मरणार्थ आयोजित भाषण प्रतियोगिता की चल वैजयंती वायु सेना केंद्र, जालहल्ली,बेंगलूरु को प्रदान की। श्रीमती अनुश्री, हिंदी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ।

**मिलने पर मित्र का सम्मान करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो, तथा आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करो।** **अरस्तू (अरिस्टोटिल)**

## कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में " माइक्रोसॉफ़्ट एक्सेल " पर विशेष वक्तव्य

बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 20.10.2016 को **"माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल"** विषय पर हिंदी में विशेष तकनीकी व्याख्यान आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बोर्ड के उप निदेशक (रा.भा) श्री एम. पी दामोदरन ने अतिथि वक्ता श्री सुधाकर कुंब्ले, मुख्य प्रबंधक (सेवा निवृत्त), विजया बैंक तथा उपस्थित सभी प्रशिक्षार्थियों का स्वागत किया तथा संकाय सदस्य का संक्षिप्त परिचय कराया।

अतिथि वक्ता ने नेमी कार्यालयीन कार्यों में माइक्रोसॉफ़्ट एक्सेल के विभिन्न अनुप्रयोगों तथा व्यावहारिक उपयोगिताओं के संबंध में सरल हिंदी में अत्यंत ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया जिससे उपस्थित सभी प्रशिक्षार्थी प्रभावित हुए। यह वक्तव्य पारस्परिक संवाद पर आधारित रहा है, जिससे प्रशिक्षार्थी कार्यालयीन कार्य के दौरान उनके सम्मुख आनेवाली कठिनाइयों के समाधान निकालने में भी सक्षम हुए।

विशेष तकनीकी व्याख्यान माला के अधीन आयोजित इस वक्तव्य में बोर्ड के विभिन्न अनुभागों में कार्यरत 20 अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित हुए। श्रीमती अनुश्री पी.एस, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

### ज़रा हँसिए .....

एक व्यक्ति बहुत अधिक इडली खाया करता था। एक बार सर्कस वालों ने उसे देख लिया और आइटम प्रस्तुत करने ले गया। पहले शो के समय उसके पास चालीस इडलियाँ रख दीं और उसने सब खा ली। दूसरे व तीसरे शो के दौरान भी उसने उतनी ही इडलियाँ खाईं। शो के बाद वह जाकर मैनेजर से पूछने लगे " साहब, मुझसे केवल काम ही करवाओगे या खाने के लिए कुछ देंगे ?"

# कविता – कुंज

" कविता बहुत अधिक खुशी तथा बहुत अधिक दुख में ही उत्पन्न होती है "

डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

# कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में नराकास के तत्वावधान में अंतर-कार्यालयीन हिंदी प्रतियोगिता संपन्न

नराकास (कार्यालय), बेंगलूरु के तत्वावधान में संयुक्त हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दिनांक 07.11.2016 को **"तस्वीर देखें कविता लिखें"** प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इस प्रतियोगिता में एक चित्र स्क्रीन पर प्रदर्शित करते हुए कविता लिखने का अनुदेश दिया गया था। इसमें भाग लेने हेतु बेंगलूरू स्थित विभिन्न सदस्य कार्यालयों से 26 प्रतिभागी उपस्थित हुए थे।

इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार (3) क्रमश: श्री पी. के गौड़, लेखा सहायक, वायुसेना स्टेशन जालहल्ली, बेंगलूरु; सुश्री निधि नेगी पटवाल. प्रबंधक, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, बेंगलूरु; श्री के. नागेंद्र, सहा.सचिव(आशु), कॉफ़ी बोर्ड; श्री आशुतोष चंद मिश्र, आयकर निरीक्षक, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय, बेंगलूरु; श्री संदीप कुमार, वैज्ञानिक, जी टी आर ई, बेंगलूरु तथा श्री जे डब्ल्यू ओ एस. विश्नोई, वायुसेना स्टेशन जालहल्ली, बेंगलूरु को प्राप्त हुए।

दिनांक 26.12.2016 को राष्ट्रीय वांतरीक्ष प्रयोगशालाएँ, बेंगलूरु के परिसर में आयोजित भव्य समारोह में संयुक्त हिंदी दिवस समारोह की प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

# वाह रे वाह कॉफ़ी !

सुबह हुई, सूरज निकला
भाग रहा अंधेरा
फैल रहा उजाला
मंद हवा से निकली ठंडक
लुभा रही है मन को मोहक

ऐसे में दिल चाहता है
सिर्फ एक प्याली गरम कॉफ़ी
बढ़िया महकवाली, खुशबूदार कॉफ़ी
दे रही है मुझे मधुर स्वाद
वाह ! क्या खूब है कि कॉफ़ी का कमाल

सिर्फ एक कप कॉफ़ी सुलझाती है सास को
मुस्कराती है अपनी बॉस को
मैं शुक्रगुज़ार हूँ कॉफ़ी का
नहीं .....!
उस कुदरत का, जिसने कॉफ़ी उगाई
और फैलाया है इस धरती में कॉफ़ी का स्वाद

एक प्याला कॉफ़ी कर देगा कमाल
कॉफ़ी !!
वाह रे वाह कॉफ़ी !
जो नहीं पिएगा
वह है बदनसीब !

**डॉ.संतोष रेड्डी माचेनहल्ली, अनुसंधान सहायक**
**पादप रोग विज्ञान प्रभाग, सी सी आर आई**

## छाया नाटक

**सूरज देवता है – छाया पाप है।**

**सूरज से दूर तो छाया लंबी है।**

**सूरज के पास तो छाया छोटी है।**

**सूरज से जुड़ें तो छाया कहाँ है?**

# प्राकृतिक वादियों में जीवन

मेरा है बस एक हसीन सपना,
सुंदर वादियों में गुज़रे जीवन अपना।
चारों तरफ हो हरियाली - ही - हरियाली,
जहाँ धरती माँ भी लगे निराली।

पंछियों की मधुर चहचहाहट हो,
बहती पवन की सरसराहट हो।
पंछियों की मधुर चहचहाहट हो,
बहती पवन की सरसराहट हो।

पास में ही बह रहा हो श्वेत निर्मल झरना,
मानो कल-कल की आवाज़ में चाहता हो कुछ कहना।
सुबह-सवेरे रोज़, मैं करूँ उसमें स्नान,
लेते हुए मधुर सुरों की तान।

स्नान करते ही तन-मन हो जाए बाग-बाग,
जैसे कि स्फूर्ति की लग गई हो शरीर में आग।
इतने में पर्वतों के बीच से हो सूर्यदेव का आगमन,
जो महका दें घर आँगन और खिलता चमन।

हाथ जोड़कर, मैं नित उन्हें नमस्कार करूँ,
गुणी किरणों के गुच्छों को स्वीकार करूँ।
पची - पची  डाली - डाली चमक उठे,
तरू - तरु पल्लव-पल्लव  भी दमक उठे।

मोर पंख फैला छत पर नृत्य करे,
देख नृत्य, कपि डाली - डाली अजब कृत्य करें।
होकर प्रफुल्लित करूँ मैं कर्म के लिए प्रस्थान,
लेकर उदर में थोडा जलपान।

रस्ते में झरने से बह रही हो सुंदर नदी की धारा,
जिसमें उछल - कूद रही हो मछली सितारा।
देख खेल उसका आनंद का आभास करुँ,
कर मस्तक ऊँचा जोश की साँस भरूँ।

नौकाओं का जत्था जिसमें घूम रहा हो,
छोटे - छोटे बच्चों का दल उनमें झूम रहा हो।
सोचकर उनकी हरकतें मंद - मंद मुस्कुराऊँ,
कार्यक्षेत्र से लौटकर करूँ एक बार नौका विहार।

जैसे-जैसे नीर के बीच शरण करूँ,
दिन-भर की थकान का हरण करूँ।
बाहर निकलते ही पास में हो पुष्पों का घेरा,
जिन पर मचल रहा हो तितलियों का डेरा।

खुशियों के मंदिर का हो छोटा-सा आशियाना,
जिसके ऊपर हो नीले गगन का शामियाना।
रात्रि होते ही सारे - तारे करें अंबर की सजावट,
देते हुए हर - अगले प्रहर की आहट।

ना हो कोई प्रदूषण और गंदगी की भ्रांति,
चारों तरफ हो खुशहाली और जीवन की शांति।
परिवार व मित्रों के साथ वहाँ मैं वास करूँ,
धरती के स्वर्ग का स्वयं एहसास करूँ।

ऐसा ही है मेरा हसीन सपना,
सुंदर वादियों में बीते जीवन अपना।
यही बात कहने, मैं कॉफ़ी बोर्ड आया हूँ,
दिल में संजोए हसीन सपने को साथ लाया हूँ।

जय हिंद ! जय हिंदी !!

**पी.के. गौड़**
**लेखा सहायक**
**वायु सेना स्टेशन, बेंगलूरु**

(**"तस्वीर देखें - कविता लिखें"** अंतर-कार्यालयीन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कविता)

**राष्ट्र भाषा सर्वसाधारण के लिए आवश्यक है तथा हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी ही बन सकती है।**

**लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक**

**राष्ट्रीय मेल एवं राजनैतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी तथा नागरी का प्रचार आवश्यक है।**

**पंजाब केसरी लाला लजपत राय**

**देश को एक संपर्क भाषा की आवश्यकता है, वह हिंदी ही हो सकती है।**

**श्रीमती इंदिरा गांधी**

# मोरनी की नाच

मोर खड़ा था जंगल के उस पार
अचानक देखते मोरनी को
पड़ा उस पर तार

तब हुआ बादल से घनघोर शोर
आ गिरा पानी मेघ से ज़ोर
खुशी से निकला मोर

अपना रंग-बिरंगे पंखों को बार-बार
नाचना शुरु किया मोर
बिखरे हुए पंखों को करके फर्र-फर्रा
किसने सिखाया मोर को नाच
कौन सीखेगा मोर से नाच

ताज रखके सिर पर
खुशी से नाचती है फर्र-फर्रा
नहीं निकलता है ज़रा-सा भी रंग

सौंदर्य़ इसकी है दुशमन इसका
जंगली बिल्ली का है यह आहार,
और मानव करता इसका शिकार
चलता है धीरे-धीरे
जब गिरता है पानी, जैसे हीरे-हीरे

रात बिताती है वृक्षों पर डर के मारे
फिर भी है राष्ट्र पक्षी हमारे
क्या कोई गिना है इसके पंखों को
और समझ सके इसके रंग सजावट को,

भगवान के वरदान है इस धरती को
पकड़ के मत रखो पिंजरे में,
किसी मोरनी जंगल में होंगी इंतज़ार में
मोर नाच रही है अपनी खुशी के लिए

मत मारो इसको अपनी स्वार्थ के लिए
नहीं है इसके पास आईना देखने के लिए
धन्य होगा वह, जो देखेगा इसकी नाच
विधाता को प्रणाम है तेरा इस अद्भुत सृष्टि के लिए

**के. नागेंद्र,सहायक सचिव,**
**प्रोन्नयन अनुभाग, मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु**

(**हिंदी पखवाडा -2016** के दौरान **तस्वीर देखें कविता लिखें** प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

# भारत की कॉफ़ी

कितनी भी पी लूँ मैं कॉफ़ी,
लगती नहीं है काफी

सुगंध इसकी कर देती है मुझे बेचैन,
बिना पिए न दिल को आए मेरे चैन

पी कर मन हो जाता मेरा तरो - ताजा,
मना न कर पाऊँ, जब दोस्त कहे कॉफ़ी पी ले आ जा
ऊब जाऊँ, भी इससे कैसे, जब स्वाद हो ऐसे-ऐसे

जब-जब बाबा बुदान-गिरी व नील-गिरी,
मेरे कप में गिरी, तब-तब मैं जाग उठी
ब्रह्मपुत्रा की धारा, हिला देता है मन सारा

आनमलै न आने दे मुझको जमाई, अरकू की चाकू जाती है दिल के आर-पार,
पीती रहती हूँ मैं मानसूंड मलबार, बार-बार
चिकमगलूर और कूर्ग ने दिया हर प्रतिबल दशा में मेरा साथ,
ट्रैवनकोर की डोर, फिर कैसे दूँ मैं तोड़ अपने हाथ

भारत की कॉफ़ी है बड़ी खास !
पीने के बाद कीजिए, आप मेरा विश्वास

**दीपिका कुमार उमेश**
**पादप कायिकी विभाग**
**केंद्रीय कॉफ़ी अनुसंधान संस्थान**

## कॉफ़ी से संबधित कुछ रोचक बातें

- इस दुनिया में एक दिन में औसतन लगभग 2.25 अरब (बिलियन) कप कॉफ़ी पी जाती है।
- अंतराष्ट्रीय बाज़ार में पेट्रोलियम के बाद सबसे अधिक व्यापारित वस्तु कॉफ़ी है।
- आफ़्रिकी जनजातीय लोग कॉफ़ी दानों के साथ वसा (फैट) मिश्रित करते हुए खाद्य ऊर्जा बोल्स बनाते हैं।

# झरने की व्यथा

**("तस्वीर देखें - कविता लिखें"** अंतर-कार्यालयीन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कविता)

निर्झर - निर्झर, कोमल - कोमल,
शीतल - शीतल, कल - कल - कल,
मन में पैदा करता हलचल,
कलरव करते बहता यह अमृत जल।

मधुर मनोहर पावन,
अद्भुत दृश्य हरता हुए मन,
पशु - पक्षी मनुष्य को देता जीवन,
यह शुद्ध पवित्र जल पावन।

दूध-सी सफेद काया,
ऊपर बादलों का मँडराता साया,
देखकर माँ का आँचल याद आया,
उसकी तरह इसने भी बस अमृत ही बहाया।

इठलाके इतराके मटककर पत्थरों को काटकर,
यहाँ - वहाँ, वहाँ - यहाँ भटककर
पहुँच गया मैं फिर इंसान के जंगल में,
जहाँ न जगह किसी के लिए किसी के हृदय में।

मेरे निश्चल, निर्मल प्यार के बदले,
मुझ पर अपना कचरा - मलवा उड़ेले,
सड़ी - गली सब्ज़ी, कारखानों का ज़हर,
अपने घर की गंदगी, मृत अधजली नाशों का कहर।

ऊँची - ऊँची दीवारों बनाकर,
मेरी गति को दिया बाँध,
फिर भी मैंने दिया इसको,
बिजली, खाना, जीवन और प्राण।

अपनी तरह मुझको भी बाँटा,
बिठाए मुझ पर राष्ट्र, राज्यों, नगरों के पहरे,
अपनी फितरत से हारकर,
फिर मचाया मेरे नाम पर कोहरम।

मेरे प्यार के बदले, देखो मुझे क्या मिला,
सुनकर मेरी व्यथा हुए हृदय पिघला,
कहाँ जाएगा मनुष्य तू, प्रकृति का नाश कर,
निहारेगा का क्या फिर तू बस मुझे किताब पर?

**निधि नेगी पटवाल**
**प्रबंधक, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड,बेंगलूरु**

# मन मोहक मोर

**(हिंदी पखवाडा -2016 के दौरान तस्वीर देखें कविता लिखें प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)**

जब - जब बादल छाए,
मोर का मन झूम उठे,
नाचने का मन करता है
उसे मोरनी के साथ।

रंग - बिरंगे पंख निकाले,
झूम - झूम कर धरती पर नाचे,
जो भी इसे देखें, हो जाए
खुशी से पागल दिवाने।

इसकी आँखें हैं आकर्षक
इसकी पंखें हैं रंग - बिरंगे,
बिना गाना यह नाचे मन से
अपनी ही सुर - ताल से।

जगत के हर पक्षी से अति सुंदर है मोर,
परियों की रानी है मोरनी,
एक दूसरे के साथ नाचने लगे तो
लगता है शिव पार्वती की नाच।

सफेद रंग का मोर भी सुंदर,
लगे जैसे हिमालय से आया हो
हिम से नहाकर सफेद रंग पाया हो।

तुम्हारी खूबसूरती से सबका मन बहलाते हो तुम,
भारत के राष्ट्र पक्षी के पीठ पर विराजते हो तुम।

**वनिता आर गौड़ा, कनिष्ठ सहायक,**
**प्रोन्नयन अनुभाग, मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु**

**राजभाषा हिंदी में काम करते समय**

**शब्दों के लिए अटकिए नहीं,**
**शैली के लिए रुकिए नहीं,**
**अशुद्धियों से घबराइए नहीं,**
**निस्संदेह आपकी भाषा सुधरेगी**
**तथा आपको हिंदी सरल एवं सुगम लगेगी।**

# पंख बिसराए मोर

पंख बिसराए खड़ा मोर,
नाच-नाच चख चोर ।
रंग पंखों का है सुहावना,
कितना सुंदर है इसका पंख पसारना ।

जीवन भी हो इतना रंगीन,
तो रहे सुख, सदा संगीन ।
नाचता मोर, देखती मोरनी,
सुख दुःख है साथ निभानी ।

आकाश पे छाए बादल...तो...
धरती पे हे तू पंख बिखेरता ।
वाह रे ! कुदरत की करीश्मा,
क्या रे ! तेरी अनुपम सुंदरता ।

हे ! बादल, तू तो काला
तेरा है रंग धुंधला ।
तुझे देखकर मोर हर्षाए
नाच - नाच खुशी न समाए,

ऐसा तुझमें क्या है भला !
तुझपे न्योछावर है रंगो का मेला

**अनुश्री पी.एस**
**कनिष्ठ हिंदी अनुवादक**
**राजभाषा स्कंध, कॉफ़ी बोर्ड,बेंगलूरु**

**हिंदी पढ़ना एवं पढ़ाना हमारा कर्तव्य है, उसे हम सबको हृदय से अपनाना है।**
**लाल बहादूर शास्त्री**

**सबको हिंदी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।**
**चक्रवर्ती राजगोपालचारी**

**हिंदी एक जानदार भाषा है। वह जितनी बढ़ेगी, देश को उतना लाभ होगा।**
**जवाहरलाल नेहरु**

# निबंध सौरभ

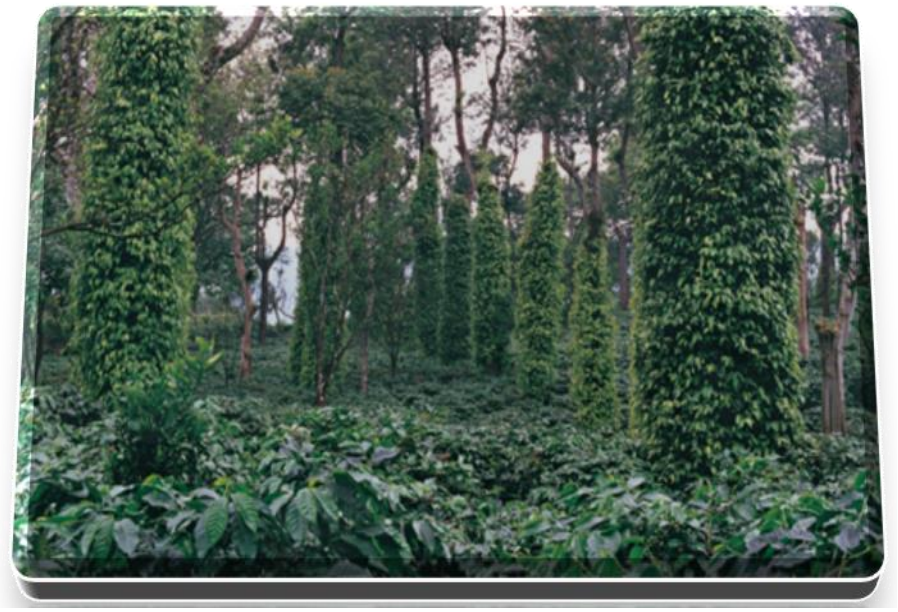

"अपना समय औरों के लेखों से खुद को सुधारने में लगाइए, ताकि आप उन चीजों को आसानी से जान पाएं जिसके लिए औरों ने कठिन मेहनत की है।"

सुकरात

## कॉफ़ी – एक उत्तम स्वास्थ्यवर्धक पेय

आजकल कॉफ़ी हममें से कई लोगों का पसंदीदा पेय है, जबकि कुछ लोगों के लिए यह थकान मिटाने तथा स्फूर्ति बटोरने का साधन है। कॉफ़ी पर किए गए कई अनुसंधान से यह साबित हो गया है कि कॉफ़ी का एक जादुई कप मानव के स्वास्थ्य पर अत्यधिक प्रभाव डालता है। इस लेख में मानव के स्वास्थ्य पर कॉफ़ी के प्रमाणित सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

अमेरिका के वेंडरबिल्ट विश्वविद्यालय, नैशविल्ले, टेनिसी के द्वारा कॉफ़ी के मानव स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव के बारे में किए गए अध्ययन से यह तथ्य सामने आया है कि कॉफ़ी का सेवन कुछ गंभीर बीमारियों के निवारण के लिए सहायक है।

कॉफ़ी के एक कप में लगभग 2,000 से अधिक स्वस्थ्यकारक यौगिक सम्मिलित हैं जिनमें से अधिकांश भुनाई की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होते हैं । विटमिन पी पी (नियासिन), अमिनो एसिड, गुड, लिपिड्स, खनिज, कैफ़ीन, केफ़ेस्टॉल, पोलीफ़िनोल्स, क्लोरोजेनिक एसिड (सी जी ए) आदि कॉफ़ी में पाए जाने वाले यौगिकों में से कुछ हैं। इनमें से मुख्यतया कैफ़ीनयुक्त पोलीफ़िनोलस से व्युत्पन्न यौगिकों जैसे कफ़ेइक एसिड, फ़ेनिलिंडांस तथा मेलानोइडिंस में एंटी-ऑक्सीडेंट गुण है जो मानव-शरीर की रोग निवारण प्रणाली में अपना योगदान देते हैं।

गरम कडक कॉफ़ी का एक कप अत्यंत कठिन काम करने वाले लोगों को बिना थकावट से काम करने में मदद प्रदान करती है। कॉफ़ी पीने से ध्यान, एकाग्रता एवं तुरत चिंतन के लिए मदद मिलती है। कॉफ़ी के इस सकारात्मक प्रभाव ने इस जादुई पेय को हर प्रकार की आयु के समूहों के बीच एक पसंदीदा पेय बना दिया है।

ग्रीन एवं रोस्टड कॉफ़ी में पाए जाने वाला कैफीन मंद उत्तेजक रूप में मानव शरीर के केंद्रीय स्नायु तंत्र को प्रभावित करते हुए बेहतर मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रवर्धित करता है।

मानव के खाद्य पदार्थों में पाए जाने वाले घटकों में से कैफीन पर ही सबसे अधिक परीक्षण किया गया है। इन परीक्षणों से यह प्रमाणित हुआ है कि एक से दो कप तक की कॉफ़ी में उपलब्ध कैफ़ीन एक व्यक्ति की वैयक्तिक क्रियाकलापों में सुधार, एकाग्रता प्रोन्नयन तथा सर्दी के प्रभाव से होनेवाली मंदता को कम कराने का कार्य करता है। दोपहर के भोजन के बाद होनेवाले आलस्य मिटाने और मन की एकाग्रता को बनाए रखने के लिए एक कप कॉफ़ी मददगार साबित हुई है। अब यह भी साबित हो गया है कि एक कप कॉफ़ी से समस्याओं से त्रस्त या आक्रामक स्वभाव के बच्चों के व्यवहार में सुधार लाया जा सकता है।

तैराकी, साईकिलिंग तथा टेनिस जैसे खेलों में कैफ़ीन के प्रभाव से एथलीटों के प्रदर्शन में सुधार पाया गया है। कॉफ़ी के शौकीन तथा कॉफ़ी न पीने वाले लोगों की तुलना करें तो कॉफ़ी पीनेवालों की बौद्धिक क्षमता बेहतर पाई गई है। ब्लैक कॉफ़ी के एक सामान्य कप में 80-85 मि.ग्रा. कैफ़ीन तत्व सम्मिलित है, इंस्टेट कॉफ़ी तथा डिकैफ़िनेटड कॉफ़ी के एक कप में क्रमश: 60 मि.ग्रा. व 3 मि. ग्रा कैफ़ीन पाया जाता है। प्रतिदिन 400 मि. ग्रा तक के परिमाण के कैफ़ीन के सेवन से स्वास्थ्य के लिए कोई खतरा नहीं है।

ऐसा प्रमाणित किया गया है कि दमा जैसी साँस की बीमारियों से पीडित रोगियों के लिए भी कैफ़ीनयुक्त कॉफ़ी का सेवन आराम्दायक है। यूरोप एवं अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान केंद्रों के द्वारा कैफ़ीन पर किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान ने यह साबित किया है कि प्रतिदिन तीन या उससे अधिक कप कॉफ़ी के सेवन से दमा का असर कम हो जाता है।

कॉफ़ी का सेवन से अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति, मदिरापान तथा सिरोसिस जैसी समस्याओं से भी आराम मिलता है जिसका मुख्य कारण कॉफ़ी में सम्मिलित क्लोरोजिनिक एसिड (सीजीए) का तत्व है । प्रतिदिन तीन से चार कप कॉफ़ी के सेवन से पार्किंसन्स रोग के खतरे को 2-3 गुना कम किया जा सकता है । “हृदय-रोग पर कॉफ़ी के प्रभाव” विषय पर किए गए अनुसंधान से स्पष्टतया यह साबित कर दिया है कि कॉफ़ी-सेवन के परिमाण तथा कोरोनरी हृदय रोग के बीच कोई संबंध नहीं है।

पुरुषों में पित्ताशय की पथरी (गाल ब्लैडर स्टोन) बढने का खतरा कम कराने में कॉफ़ी सेवन सहायक सिद्ध हुआ है। 10 वर्षों के निरंतर अध्ययन से यह प्रमाणित किया गया है कि नियमित रूप से 2-3 कप तक कैफ़ीनयुक्त कॉफ़ी पीनेवाले पुरुषों में गालस्टोन रोग के खतरे की संभावना 40% तक तथा प्रतिदिन चार या उससे अधिक कप कॉफ़ी पीनेवाले पुरुषों में यह खतरा 45% तक कम पाया गया है। कॉफ़ी सेवन पर अध्ययन ने यह स्थापित किया है कि यह दिल के सिरोसिस रोग के खिलाफ एक सशक्त सुरक्षात्मक उपाय है, प्रतिदिन 3-4 कप कॉफ़ी पीने वाले लोगों में कॉफ़ी न पीने वाले लोगों की तुलना में सिरोसिस के जोखिम की संभावना 80% कम पाया गया है।

ऐसा कहा जता है कि कॉफ़ी सेवन से कैंसर आनी की संभावना अधिक ह, इस कथन पर कोई सच्चाई नहीं है। इसके अलावा, कॉफ़ी के सेवन से पेट के कैंसर आने की संभावना कम पाया गया है। कॉफ़ी का उपभोग एवं अग्नाशय के कैंसर के मामले में यू (‘U’) के आकार का संबंध पाया गया है। थोडी या स्वस्थ मात्रा के कॉफ़ी सेवन से जैसे प्रतिदिन चार कप तक कॉफ़ी का सेवन, अग्नाशय के कैंसर के जोखिम को रोकने में समर्थ पाया गया है।

क्या कॉफ़ी के अधिक सेवन से टाईप - 2 मधुमेह का खतरा कम होगा? हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ (एच एस पी एच) के अनुसंधानकर्ताओं के द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह साबित हुआ कि चार साल की अवधि के दौरान प्रत्येक दिन कॉफ़ी खपत, एक या उससे अधिक कप कॉफ़ी पीने वालों में टाइप-2 मधुमेह आने की संभावना 11 % तक कम है जबकि कॉफ़ी न पीनी वालों में यह खतरा 17 % तक अधिक पाया गया है।

मुख्यतया कॉफ़ी में उपलब्ध एंटीऑक्सीडेंट की पर्याप्त मात्रा के कारण ही कॉफ़ी सेवन मानव स्वास्थ्थ के लिए अत्यधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है। विशेषज्ञों की राय में प्रतिदिन लगभग चार कप तक कॉफ़ी का सेवन स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित है तथा एक स्वस्थ जीवन शैली के लिए यह लाभकारी है।

प्रसिद्ध कॉफ़ी अध्ययन केंद्र, वेंडरबिल्ट संस्थान के ड़ॉ पीटर मार्टिन, एम.डी, कहते हैं " हममें से कई कॉफ़ी सेवन को लेकर बहुत चिंतित है, क्या इतना उत्तम पेय आप के स्वास्थ्य के लिए कभी भी बुरा हो सकता है ? परंतु आधुनिकतम वैज्ञानिक सबूतों ने यह साबित किया है कि आर्दर्शवादी मात्रा जैसे प्रतिदिन 2 से 4 कप तक की मानक मात्रा में कॉफ़ी सेवन मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है।"

इसलिए मेरी राय यही है कि चाहे अब तक आप के लिए कॉफ़ी पंसदीदा पेय बन गया हो या न हो आज से ही कॉफ़ी पीना शुरू कीजिए और एक स्वस्थ एवं संतुष्ट जीवन बिताने की ओर अग्रसर हो जाइए।

**डॉ.जीना देवस्या,**
**विषय वस्तु विशेषज्ञ**
**ऊतक संवर्धन एवं जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग ,मैसूरु**

संदर्भ सूची :-

1. हजेनफ्राट्स, एम, जॉक्वेट, एफ., आइशबॉक डी एवं बैटिग (1991) इंटरेक्शंस ऑफ़ स्मोकिंग एंड लंच विथ थि एफेक्स थि केफ़ीन ऑन कार्डियोवैस्क्युलर फंक्शन्स एंटी इंफरमेशन प्रोसेसिंग, ह्यूमन साइकोफार्मकॉलॉजी, 6, 277-284.
2. स्मिथ, ए पी., रस्टेड, जे एम., ईटन - विलियम्स, पी सेवॉरी, एम. और लीथवुड, पी (1990) इफेक्ट्स ओफ़ थि कफैन गिवन बिफोर एंड आफ्टर लंच ऑन स्टैइंड एटेंशन. न्यूरो-साइको-बयोलॉजी, 23:160-163.
3. मैकिंटोश, बी.आर एण्ड व्रैट, बी.एम. (1995) कैफ़ीन इंजेक्शन एंड परफार्मेंस ऑफ ए 1500 - मीटर स्विम, केनेडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड फिसियॉलॉजी, 20, 168-177.
4. नवरॉट पी, जोरडन एस, ईस्टवुड जे, रॉटस्टेन जे, ह्यूगेनहोल्ट्ज़ ए एंड फीली एम (2003) मानव स्वास्थ्य पर कैफ़ीन का प्रभाव; खाद्य योजक एवं संदूषक 20: 1-30

5. किविटी, एस., अहरॉन वाई बी., नान ए. एवं टॉपिलस्कि.एम (1990) थि इफेक्ट्स ऑफ कैफ़ीन ऑन एक्सरसाइज़-इंड्यूज़्ड ब्रोंको-कोनस्ट्रीक्शन, चेस्ट 97, 1083- 1085.
6. डेनियल जी स्टेफ्फन (2001) ऑन प्रोमोटिंग दी गुड न्यूज़ एबाउट कॉफ़ी, क्राफ्ट फुड्स नॉर्थ अमरिका, ग्लेनव्यू, आई एल, यू एस ए विश्व कॉफ़ी सम्मेलन, लंडन, यू के, में प्रस्तुत किया गया शोधपत्र, 17-19 मई, 2001.
7. डॉर्कि.के.लिमा (2001) परियोजना कॉफ़ी एवं स्वास्थ्थ, कॉफ़ी अध्ययन संस्थान, वेंडरबिल्ट विश्वविद्यालय के चिकित्सा केंद्र, नैशविल्ले, टी.एन, ई.यू.ए., 17-19 मई 2001 को आयोजित विश्व कॉफ़ी सम्मेलन,लंडन,यूके, में प्रस्तुत किया गया शोधपत्र
8. लेइट्ज़मन, एम.एफ विल्लेट्ट, डब्ल्यू सी., रिम्म, ई बी., स्टॉपफर एम जे., स्पीज़लमैन.डी.,कोल्डिट्ज, जी ए., गियोवानुक्की, ई. (1999) कॉफ़ी के उपभोग का एक संभावित अध्ययन तथा पुरुषों में रोगसूचक पित्ताशय पत्तरी रोग के जोखिम. जर्नल ऑफ अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन, 281 (22): 2106 - 2112.
9. क्लॉटस्की एंड आर्मस्ट्रोंग (1992),आल्कोहॉल, स्मोकिंग, कैफ़ीन एवं सिर्होसिस, (अमेरिकन जर्नल ऑफ एपिडेमियॉलजी) 136,1248-57.

## ज़रा हँसिए ..........

साडियों की एक दुकान के बाहर एक बोर्ड लगा था
"केवल दस मिनट में साड़ी पसंद करने वाली महिला को एक हज़ार रूपए मुफ़्त में दी जाएगी। "

अध्यापक ने विद्यार्थी से पूछा - " बताओ! स्वर और व्यंजन में क्या अंतर है? "
विद्यार्थी – "स्वर मुँह से बाहर आते हैं व व्यंजन मुँह से अंदर जाते हैं। "

परीक्षा कक्ष में चुप बैठे एक विद्यार्थी से अध्यापक ने पूछा – "क्या प्रश्न-पत्र बहुत कठिन है?"
विद्यार्थी – " जी नहीं "
अध्यापक – " फिर तुम कुछ भी लिखे बिना क्यों बैठे हो ?"
विद्यार्थी – " मैं यह सोच रहा हूँ कि किस-किस प्रश्न के उत्तर कौन-कौन सी जेब में हैं।"

एक बार एक जेल के सभी कैदियों ने मिलकर जेलर से राम लीला खेलने का अनुरोध किया। जेलर ने एस पी महोदय से पूछकर अनुमति दी। दो दिन बाद एस पी महोदय ने उदास बैठे हुए जेलर को देखकर पूछने लगे – " क्यों भई, इतने उदास क्यों बैठे हो ? "
जेलर ने कहा – " क्या कहूँ सर, हनुमान के निकलने के बाद तीन दिन हो गए, अभी तक संजीवनी बूटी लेकर नहीं आए। "

# एक सुनहरा पल - ज़िंदगी का

भाग-दौड़, उतार-चढ़ाव व सुख-दुख से भरी है यह ज़िंदगी ! इन सब उसूलों को हँसते हुए स्वीकार करने का माध्यम है यह ज़िंदगी, जीना भी एक कला हैं उसीका नाम है ज़िंदगी।

यूँ तो मैंने अपने जीवन के 28 वर्षों के दौरान अनेक सुनहरे पल देखें और उनका आनंद लिया। मगर सिर्फ एक ही पल ऐसा है जिसे मैं कभी भी नहीं भूल सकता।

बात है यह जनवरी 2016 के प्रथम दिन की । एक दिन पहले यानि 31 दिसंबर 2015 को निकलते हुए लंबी यात्रा के बाद मैं प्रातःकाल तकरीबन पाँच बजे अपने गाँव में अपनी माता-पिता के पास उनकी शादी की 42 वीं सालगिरा मनाने पहुँचा। मैंने उनकी शादी की वर्षगांठ पर बधाई देते हुए उनके चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिया। चूंकि मेरे लिए वह एक सुनहरा पल था, जब मेरे भैया-भाभी व मेरी प्यारी भांजी (प्रणवी) भी उस अवसर पर उपहार लेकर वहाँ पहुँच गई थीं।

इस सुनहरे पल का आनंद लेने के लिए हमने अपने माता-पिता का पसंदीदा जगह माताजी का पुस्तैनी खेत चुना।

पूरी तैयारी के साथ हम अपने खेत पहुँचे और पक्षियों की चहचहाहट से भरी ठंडी-ठंडी हवा के बीच रंग बदलते बादलों और पेड़ की छांव के नीचे बैठकर हमनें गपशप और हंसी-मजाक का सिलसिला शुरु किया। इसी हंसी-मज़ाक के बीच मेरे भैया-भाभी और भांजी ने उन्हें उपहार भेंट कर उनकी शादी की वर्षगांठ की बधाई दी तथा आशीर्वाद लिया।

तब मुझे अफसोस हुआ कि चूंकि मैं कुछ उपहार नहीं ला पाया, तो मैं सोचने लगा

“अपने माता-पिता को कौन-सा उपहार भेंट करूँ? ”

सोचते-सोचते मुझे एक फोन कॉल आया और उठाया तो ....(आज भी मुझे वह आवाज़ याद है)
“जी अरूण कुमार बोल रहे हैं? ”

मैंने कहा -“ जी सर, मगर आप कौन ? "

जवाब मिला - “ मैं कॉफ़ी बोर्ड से बात कर रहा हुँ, क्या आपने अपना ई-मेल चेक किया”?

मैंने कहा - “ नहीं सर ”

उन्होंने कुछ गंभीर होते हुए बोला -“ कृपया चेक कीजिए सर और सारे अनुदेशों पढकर व आवश्यक दस्तावेजों के साथ पंद्रह दिनों के अंदर रिपोर्ट कीजिए। कॉफी बोर्ड में अनुसंधान सहायक ग्रेड -1 पद पर आपका चयन हो गया है।"

यह सुनकर मेरे तो होश ही उड़ गए, मानो सब कुछ थम-सा गया हों। अपने आपको होश में पाने के बाद मैंने यह खुशखबरी अपने माता-पिता, भैया-भाभी को सुनाया, यह सुनकर वे सब आवाक रह गए। फिर तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। मैं अपने माता-पिता की आँखों में खुशी की आँसू महसूस कर सकता था और देख भी सकता था। मेरे माता-पिता, भैया-भाभी और भांजी ने मुझे ढेर सारी बधाईयाँ दीं और आशीर्वाद भी दिया। उस दिन मानों मेरी खुशी दुगुनी नहीं, चौगुनी हो गई थीं।

सचमुच मैंने उन्हें उनकी ज़िंदगी का सबसे अच्छा उपहार सौंप दिया था। यह उपहार उन्हें समर्पित हैं। सच में, यह सुनहरा पल में अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं भूल सकता।

**अरुण कुमार चनबसप्पा हुड़ेद,**
**ऊतक संवर्धन तथा पौधा जैव-प्रौद्योगिकी केंद्र, मैसूरू**

## हमारी अनिवार्य आवश्यकताएँ

- **राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अनुसार सामान्य आदेश, संकल्प, नियम, अधिसूचनाएँ, संविदाएँ, करार, निविदा प्रारूप, निविदा सूचनाएँ,सभी प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियाँ, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन तथा सरकारी कागज़ात अनिवार्यत: द्विभाषी में अर्थात हिंदी एवं अँग्रेज़ी में ही जारी करें। इसका दायित्व हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी पर निहित हैं।**
- **राजभाषा नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त/ हस्ताक्षरित पत्र, आवेदन, अपील या अभ्यावेदन के उत्तर केवल हिंदी में प्रदान करना अनिवार्य हैं।**
- **सरकारी विज्ञापन, वेबसाइट, लेखन-सामगियाँ (पहचान पत्र, परिचय-पत्र, बोर्ड,बैनर आदि), आवरण पत्र, अग्रेषण पत्र, रबड मोहरें,नाम पट्ट, सूचना पट्ट, फाइल कवर व रजिस्टरों पर विषय आदि द्विभाषी में ही हों।**
- **यदि हिंदी प्रशिक्षण के लिए कोई शेष हों तो उन्हें यथाशीघ्र प्रशिक्षण के लिए नामित करें।**
- **यदि किसी कार्यालय के 80% से अधिक अधिकारी/कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं तो उस कार्यालय को राजभाषा अधिनियम के अनुच्छेद 19 के उप-नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित करें।**
- **प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्यन समिति की बैठक आयोजित करें तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट मुख्य कार्यालय को भेजें।**

# पूर्वोत्तर क्षेत्र में कॉफ़ी कृषि का विकास

भारतवर्ष के पूर्वोत्तर में स्थित सात राज्यों जैसे असम, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोराम, नागालैंड, अरूणाचल प्रदेश एवं त्रिपुरा को पूर्वोत्तर क्षेत्र कहा जाता है। सामान्यतया इस अँचल में ये सात बहनों के नाम से भी जाने जाते हैं। समुन्नत हिमालय पर्वत की गोद में तथा विशाल ब्रह्मपुत्र नदी से आप्लावित यह अँचल मनोरम प्राकृतिक सुंदरता एवं सुविख्यात प्राकृतिक गेंडा जैसे अनोखे जीव-जंतु और विभिन्न प्रजाति के पशु-पक्षियों का आवासस्थल भी है।

लगभग 2,62,191 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के पूर्वोत्तर क्षेत्र का 73% पर्वतीय क्षेत्र है। यहाँ संस्कृत, असमिया, मणिपुरी, मिज़ो, पहाडी, बोडो, बंगला, नेपाली के साथ - साथ विभिन्न जनजातियों की अपनी भाषा भी बोली जाती हैं। इन राज्यों के लोगों की जीवन शैली सहज, सरल एवं सादगी से भरी हुई है तथा यहाँ की विविधतापूर्ण कला-संस्कृति भारत वर्ष के लिए अमूल्य संपदा है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र का 92% भूभाग अंतरराष्ट्रीय सीमा से परिवेष्टित है। यह क्षेत्र चीन, बंगलादेश, म्याँमार, नेपाल, भूतान आदि राष्ट्रों की सीमा से संबद्ध हैं। अत: भारतवर्ष की सुरक्षा की दृष्टिकोण से भी यह अँचल अत्यंत संवेदनशील है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र की कुल जनसंख्या 38.9 करोड़ है, जो संपूर्ण भारतवर्ष की कुल जनसंख्या का केवल 3.75 प्रतिशत है। यहाँ की जनसंख्या का लगभग 85% गाँवों में रहते हैं तथा उनकी आजीविका मुख्यतया कृषि पर आधारित है। यहाँ के पहाड़ी क्षेत्रों में प्राचीन कृषि प्रथा अर्थात झुम खेती (Shifting Cultivation) प्रचलित है और समतलीय भूभाग ब्रह्मपुत्र नदी की बाढ़ से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। इसलिए इस क्षेत्र के किसानों व जनजातीय लोगों की आर्थिक स्थिति अत्यंत निराशाजनक है तथा बेकारी की समस्या एवं पिछडेपन के कारण क्षेत्र के कई इलाकों का जनजीवन अव्यवस्थित है। दूसरी ओर, 22-30 उत्तर अक्षांश एवं 90 - 98 पूर्व उन्नतंश के अधीन स्थित यह क्षेत्र पर्याप्त वर्षापात, उन्नत एवं उपजाऊ धर्ती की दृष्टि से कॉफ़ी, चाय, रबड़, मसाले जैसे बागानी फसलों की कृषि के लिए उपयुक्त है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में शक्तिशाली युवा मानव संपदा भी उपलब्ध है, जो बागानी कृषि के विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक है। यहाँ की महिलाएँ भी काफी कर्मठ हैं तथा सदैव कृषि कार्यकलापों के साथ जुड़ी रहती हैं।

भारतीय कॉफ़ी बोर्ड ने सन् 1980 से पूर्वोत्तर क्षेत्र में कॉफ़ी की खेती के प्रचार-प्रसार का दायित्व सँभाल लिया। इससे पहले यहाँ के जनजातीय लोगों को कॉफ़ी के बारे में कोई भी जानकारी नहीं थी, अत: कॉफ़ी कृषि क्षेत्र के प्रसार के साथ-साथ देश के कॉफ़ी उत्पादन का प्रवर्धन करते हुए यहाँ के जन समुदाय का आर्थिक प्रोन्नयन भी कॉफ़ी बोर्ड का उद्देश्य था। इसके साथ ही परंपरागत व मृदा विनाशकारी झुम खेती की प्रथा के निष्कासन द्वारा प्राकृतिक संपदा सुरक्षित करते हुए कॉफ़ी कृषि क्षेत्र के प्रसार द्वारा उन्नतांश में स्थित इस क्षेत्र को विकास के पथ पर ले जाना भी इसका एक और लक्ष्य था।कॉफ़ी बोर्ड की यह पहल यह कार्य इतना सरलसाध्य नहीं था। पिछडे हुए क्षेत्र में जीवित, विशेषतया जनजातीय लोगों के बीच अक अनजान कृषि प्रथा का परिचय करवाते हुए उस क्षेत्र में सफलता पाकर प्रतिष्ठा प्राप्त करना हमेशा दु:साध्य ही होता है। विस्तारण कार्मिकों के कठिन परिश्रम एवं सीमातीत

सहयोग के माध्यम से कॉफ़ी बोर्ड के कुशल प्रबंधन के द्वारा कॉफ़ी की खेती इन पहाडी क्षेत्रों में प्रचुरता प्राप्त कर रही है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में लगभग 7018 हे. क्षेत्र में कॉफ़ी उपजाई जा चुकी है तथा लगभग 8500 से अधिक जनजातीय परिवार इससे लाभान्वित हुए हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के कॉफ़ी उत्पादन में वृद्धि, गुणवत्ता सुधार, सामूहिक संपर्क कार्यक्रम आदि के लिए कॉफ़ी बोर्ड के विस्तारण कार्मिक सतत प्रयासरत हैं। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, सामूहिक जन संपर्क कार्यक्रम आदि द्वारा आवश्यक अनुदेश, दिशा-निदेश एवं सहयोग प्रदान किए जा रहे हैं।

कॉफ़ी बोर्ड के द्वारा आर्थिक रूप से दुर्बल उपजकर्ताओं के लिए वित्तिय सहायता भी उपलब्ध कराई जा रही है। ऐसा माना जाता है कि कॉफ़ी की खेती पर्यावरण-अनुकूल है। इसके अलावा कॉफ़ी कृषि क्षेत्र में पौधों के बीच-बीच में अंतरफसल के रूप में विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधों का रोपण भी किया जाता है, जिससे उपजकर्ताओं को अतिरिक्त आय की प्राप्ति के साथ-साथ कृषि के लिए अनुकूल वातावरण भी प्राप्त होता है। प्राकृतिक परिस्थिति को ध्वस्त करने वाली झुम खेती के विकल्प रूप में प्रतिस्थापित कॉफ़ी की खेती अभी प्रतिष्ठित हो गई है, क्योंकि इससे सुस्थिर वृक्षारोपण के द्वारा बंजर पहाडी क्षेत्रों के उर्वरीकरण के लिए सहायता प्राप्त हो रही है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में कॉफ़ी की खेती से युवाओं को रोज़गार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं तथा महिलाओं को अपनी कार्य निपुणता प्रदर्शित करने का मौका भी प्राप्त हो रहा है। इस खेती के विस्तार से उपजकर्ताओं को, विशेषकर पहाडी क्षेत्रों में जीवित जनजातीय लोगों को स्थिर आय प्राप्त हो रहा है। इससे प्रभावित होकर अन्य प्रकार की खेती में व्यस्त लोग भी इस खेती को आगे बढ़ाने के लिए रूचि दिखा रहे हैं। इससे यही प्रमाणित होता है कि आधुनिक व वैज्ञानिक कृषि प्रथाओं के अनुपालन करने से उस क्षेत्र में सफलता एवं लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं।

कॉफ़ी बोर्ड के द्वारा पिछडे हुए पूर्वोत्तर क्षेत्र के कॉफ़ी उपजकर्ताओं के लिए अपनी कॉफ़ी के विपणन में भी सहायता उपलब्ध कराने से, उन्हें अपेक्षित बाज़ार मूल्य प्राप्त करने में मदद मिल रही है। इन सभी तथ्यों के आधार पर मेरा यही विचार है कि कॉफ़ी खेती के प्रसार के द्वारा कॉफ़ी बोर्ड पूर्वोत्तर क्षेत्र के आर्थिक व सामाजिक विकास के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए कॉफ़ी उद्योग के विकास में नया अध्याय जोड रहे हैं।

**डॉ. प्रणति गोस्वामी,**
**उप निदेशक (विस्तारण),**
**सिलचर, असम**

## अच्छी बात है, यदि आप :

- छोटे एवं सरल वाक्यों का प्रयोग करते\करती हैं।
- सरल हिंदी का प्रयोग करते/करती हैं।
- सामान्य तथा प्रचलित शब्दों का प्रयोग करते/करती हैं।
- तकनीकी शब्द के मूल अँग्रेज़ी रूप को देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण करते/करती हैं।
- अँग्रेज़ी से हिंदी अनुवाद किए बिना अपना मूल काम-काज हिंदी में करते/करती हैं।
- राजभाषा अधिनियम व नियम एवं अन्य आदेशों से भली-भाँति परिचित हैं।

## बापू की कलम से .....

यदि हम स्वभाव से बाध्य न होते तो हम अवश्य ही देख सकते थे कि अँग्रेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाने के कारण हमारी प्रतिभा कुंठित हो गई है और जनता से दूर हो गए हैं। इससे राष्ट्र का सर्वोत्तम मस्तिष्क निष्क्रिय हो गया है तथा जनता को नए उपलब्ध विचारों का लाभ नहीं पहुँच पाया है।

# मुन्नार- प्रकृति का अद्भुत वरदान

**मुन्नार** केरल राज्य का अद्भुत, अनोखा एवं प्रकृतिरमणीय पर्यटन स्थल है, जिसका अर्थ है- तीन नदियों से घिरा हुआ स्थल जो समुद्रतल से 1,600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। केरल के इडुक्की जिले में स्थित यह मनोरम स्थल मूतिरपुषा, नल्लथानी व कुंडला नदियों से घिरा हुआ है। मुन्नार में एक आदर्श प्राकृतिक पर्यटन केंद्र के लिए आवश्यक सभी साधन उपलब्ध हैं। निगाहों को लुभानेवाले चाय के बागान, मनमोहक हरी-भरी घाटियाँ, स्वास्थ्यवर्धक वनस्पतियाँ, घने जंगल में पेड़ों व जानवरों की अनोखी प्रजातियाँ, सुहावना मौसम तथा खुशबूदार व स्वच्छ वातावरण यहाँ पधारने वाले प्रत्येक पर्यटक की छुट्टियों को हमेशा यादगार बना देते हैं।

हालाँकि मुन्नार के प्रत्येक स्थल विशिष्ट तो है ही, फिर भी कुछ स्थल अपनी विशिष्टता की वजह से प्रसिद्ध हैं, जैसे **'इरविकुलम'** राष्ट्रीय वन्यजीव संरक्षण केंद्र जो अनेक लुप्तप्राय प्रजातियों का वासस्थल हैं। दक्षिण भारत की सबसे बड़ी चोटी **'आनमुडी'** इसी नेशनल पार्क के अंतर्गत स्थित है जो समुद्रतल से 2,695 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

मुन्नार के समीप ही **पल्लिवासल** व **चिन्नकनाल** हैं जो पवर हाउस तथा झरनों के लिए विश्वविख्यात हैं जहाँ लक्कम, आट्टूकाल, नयमक्काड़, चिन्नकनाल, कुत्तुमकाल, चेय्यप्पारा, वेलारा, तूवनम नाम के आठ झरने हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से अनेक पर्यटक आते रहते हैं तथा सपरिवार इन झरनों के निर्मल व स्वच्छ पानी में स्नान का आनंद उठाते हैं। यहाँ टाटा टी कंपनी के नल्लथानी एस्टेट के चाय बागानों के बीच स्थित **चाय संग्रहालय** में चाय व चाय कंपनियों का इतिहास प्रदर्शित किया गया है। यह पहाड़ी स्थल **'नीलकुरिंजी'** फूलों का घर भी है जो 12 साल में एक ही बार खिलते हैं । जब ये फूल खिलते हैं तब ऐसा लगता है की पूरी पहाड़ी पर नीला कालीन बिछा हुआ है। ये फूल सन 2006 में खिले थे और 2018 में फिर खिलेंगे।

दक्षिण भारत का यह मनमोहक पर्यटक स्थल आलुवा रेलवे स्टेशन तथा कोचीन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 108 किलोमीटर दूर स्थित है। अगस्त महीने से मई तक यहाँ का मौसम सुहावना रहता है।

**एम.पी.दामोदरन**
**उपनिदेशक (रा.भा)**
**कॉफ़ी बोर्ड,बेंगलुरु**

# जीवन के अनमोल वचन

आत्मविकास ही जीवन का लक्ष्य है |

कमाने में इतने व्यस्त न हो जाए कि जीना ही न भूल जाए |

व्यस्त रहना महत्वपूर्ण नहीं है, व्यस्त तो चींटियाँ भी रहती हैं। पर सवाल यह हैं कि हम किसके लिए व्यस्त रहते हैं |

इंसान जितना अपने मन को मना सकता है उतना वह खुश रह सकता हैं |

हमें जो मिलता हैं उससे हम अपनी आजीविका चला सकते हैं,मगर हम जो देते हैं उससे जीवन बनता है |

अगर व्यक्ति विशेष के जीवन में कुछ मायने रखता है तो वह है - कर्म एवं प्रेम |

द्वेष को द्वेष से नहीं बल्कि प्रेम से ही समाप्त किया जा सकता है तथा यह नियम सदा अटल है |

मैं हिंसा पर आपत्ति उठाता हुँ क्योंकि मुझे लगता है कि इससे कोई लाभ या भलाई मिलती नहीं; यदि है तो भी वह कभी भी स्थाई नहीं रहती, परंतु इससे जो हानि होती है वह सदैव स्थाई रहती है|

आप अपने जीवन के दौरान कोई ऐसा कर्म करें जिसके बाद सभी का जीवन अधिक स्थिर हो |

क्षमा करने में सदैव अव्वल रहें तथा अपने आप ही सर्वप्रथम क्षमाशील रहें, यही जीवन की मूलभूत परिभाषा है |

**अरुण कुमार चनबसप्पा हुड़ेद**
**अनुसंधान सहायक ग्रेड - 1**
**ऊतक संवर्धन तथा पौधा जैव-प्रौद्योगिकी केंद्र, मैसूरू**

## योग का महत्व

**भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व है। आध्यात्मिक उन्नति या शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता व महत्व को प्राय: सभी दर्शनों एवं भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों ने एकमत व से स्वीकार किया है। ववैदिक जैन और बौद्ध दर्शनों में योग का महत्व सर्वमान्य है। सविकल्प बुद्धि और निर्विकल्प प्रज्ञा में परिणित करने हेतु योग-साधना का महत्व सर्वमान्य स्वीकृत है। सविकल्प और निर्विकल्प का विवरण 'योग दर्शन' में दिया गया है।**

**आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है। इसके बढ़ने का कारण व्यस्तता और मन की व्यग्रता है। आधुनिक मनुष्य को आज योग की ज्यादा आवश्यकता है, जबकि मन और शरीर अत्यधिक तनाव, वायु प्रदूषण तथा भागमभाग के जीवन से रोगग्रस्त हो चला है। आधुनिक व्यथित चित्त या मन अपने केंद्र से भटक गया है। उसके अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होने में संतुलन नहीं रहा। अधिकतर अति-बहिर्मुख जीवन जीने में ही आनंद लेते हैं जिसका परिणाम संबंधों में तनाव और अव्यवस्थित जीवनचर्या के रूप में सामने आया है।**

# कहानी तरंग

"सफलता में दोषों को मिटाने की अनोखी शक्ति है" - मुंशी प्रेमचंद

# अमीर बाप गरीब बाप

एक दिन, एक अमीर पिता अपने बेटे को अपने साथ एक गाँव की यात्रा पर ले गए। उनकी यात्रा का उद्देश्य यही था - उनका बेटा समझें कि गरीबी क्या है ? कौन गरीब हो सकता है ? जीवन में गरीबी कैसे आ सकती है ? इसे पूरी तरह समझने व समझाने हेतु दोनों ने एक गरीब परिवार के साथ खेत में कुछ समय बिताया।

वहाँ से वापस आते समय पिता ने अपने बेटे से पूछा - " अरे बेटा यात्रा कैसी रही ? क्या तुमने यह है कि गरीब लोग कैसे जीवन बिताते हैं ? "

बेटे ने कहा - " हाँ, पिताजी "

फिर पिताजी ने पूछा - " तुमने इस यात्रा से क्या सीखा और क्या समझा? "

बेटे ने तुरंत जवाब दिया - " पिताजी हमारे पास एक कुत्ता है, उनके पास चार, हमारे पास पुल है, उनके पास नदियाँ, हमारे यहाँ रात में ट्यूबलाइट जलते हैं, उनके यहाँ सितारें, हम फल, सब्जी जैसी खाने की चीज़ें खरीदते हैं, वे इसे बोते और उगाते हैं, हमारी रक्षा के लिए घर की दिवार हैं, उनके पास दोस्ती और परिवार हैं, हमारे पास समय काटने के लिए मोबाइल, टेलीविज़न इत्यादी हैं, उनके पास प्रकृति, परिवार एवं रिश्तेदार हैं। "

अपने बेटे का उत्तर सुनकर पिता सन्न रह गए ।

अंत में बेटे ने यह भी कहा - " धन्यवाद पिताजी, आपने मुझे यह समझाया व एहसास करवाया कि हम कितने गरीब हैं !

इस कहानी का सार यही है कि हम अपनी सादगी, प्रेम, करुणा, मित्रता, मिलनसार व्यवहार एवं स्नेहशील परिवार इत्यादि मूल्यों से ही अमीर बनते हैं, ना कि केवल पैसा से .....

**अरुण कुमार चनबसप्पा हुड़ेद**
**अनुसंधान सहायक ग्रेड - 1**
**ऊतक संवर्धन तथा पौधा जैव-प्रौद्योगिकी केंद्र, मैसूरू**

**(टिप्पणी:** यह रोबर्ट कोयोसाकी द्वारा रचित **Rich Dad Poor Dad** का भाषा रूपांतरण है)

**महत्वपूर्ण क्या है ?**

**इस संसार में जन्म लेना महत्वपूर्ण है ,**
**जन्म मे भी नर का जन्म लेना अति महत्वपूर्ण है,**
**नर जन्म में भी सभी अंग के साथ रोग रहित होना विशिष्ठ है,**
**जीवन में धन, धान्य, शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करना सबसे महत्वपूर्ण है।**

# बारिश

तीसरी कमीज़ बदलने के बाद ख़ुद से बात करते हुए वह बड़बड़ाई, -"अगर उसने जाने से मना कर दिया तो?" आसमान में इधर-उधर से आए काले-काले बादल अपना खेल शुरु किया है, जैसे अपनी किसी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करने की योजना बनाने आए हों। अपने आप हँसते हुए वह फिर सोचने लगी, मैं प्राकृतिक सौंदर्य में भी अपने प्रबंधन का पुट डालना सीख गई हूँ। उसने सोचा एक बार तैयार होने से पहले बात कर लेती हुँ, फोन पर नंबर मिलाते ही मोबाइल बंद होने का संदेश आ गया। वह हमेशा बोलती है काला रंग मुझपे बेहद फबती है, यह सोचते हुए उसने नीली जीन्स पर काली शर्ट पहल ली, अपने बिखरे हुए बालों को सँवारा और जूते निकालने बाहर आई। वह नीचे उतरने लगी तो बारिश शुरु हो गई। वह चारों तरफ उसे खोजने लगा, तभी उसकी नज़र खिड़की के पास बैठी उस भोले-भाले चेहरे वाली महिला पर पड़ी। बारिश की फुहारों पर अपने हाथ फेरती हुई वह बेहद प्यारी लग रही थी, तभी वह मुस्कुराता हुई उनके पास गई और पूछने लगी -" तुम अभी तक तैयार नहीं हुई माँ ? हम लोग आज बाहर खाना खाने जाने वाले थे ना?"

"मैं ख़ुद बनाऊँगी, तुम जरा मेरे पास आकर बैठो। "प्यार भरी आवाज़ थी, मगर हल्का-सा संकोच भी। "क्या तुम्हें याद है? तुम बचपन में किस तरह कागज़ की नाव बनाया करती थीं ? उसकी माँ ने जवाब देने की कोशिश करते हुए, उसे अपने पास बुलाया। अब बारिश जोर पकडने लगी और माँ का मन उन बीते दिनों की यादों से भर गया, जब बेटे से मिलने के लिए उसे साप्ताहिक भोज का इंतज़ार नहीं करना पड़ता था।

**चारू स्नेह झा,प्रशिक्षार्थी**

**ऊतक संवर्धन तथा पौधा जैव प्रौद्योगिकी केंद्र, मैसूरू**

**कॉफ़ी का घूँट आपकी थकान दूर करने में मदद करता है। एक ओर जहाँ कॉफ़ी को उसके गुणों के कारण पसंद किया जाता है, वहीं कुछ लोग इसमें मौजूद कैफ़ीन को स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं मानते। लेकिन, वज़न कम करने के लिए ग्रीन कॉफ़ी के सत्त को बहुत उपयोगी माना जाता है। विशेषज्ञ भी इसे बहुत लाभकारी मानते हैं। ग्रीन कॉफ़ी में मौजूद क्लोरोजेनिक एसिड, मेटाबॉलिज़्म को बेहतर बनाता है तथा इससे वज़न कम करने में मदद मिलती है। इसलिए, ग्रीन कॉफ़ी के बीजों के सत्त वजन कम करने के नए एवं सफल हथियार के रूप में सामने आ रहे हैं। अगर, फिर भी आपके मन में कुछ दुविधा है, तो आधुनिक शोध उन दुविधाओं को समाप्त कर सकते हैं।**

# सेतु रॉय के हाथों की कमाल

रंग क्या बोलता है?

सूली पर चढ़ाया हुआ ईसा मसीहा

मीलों दूर

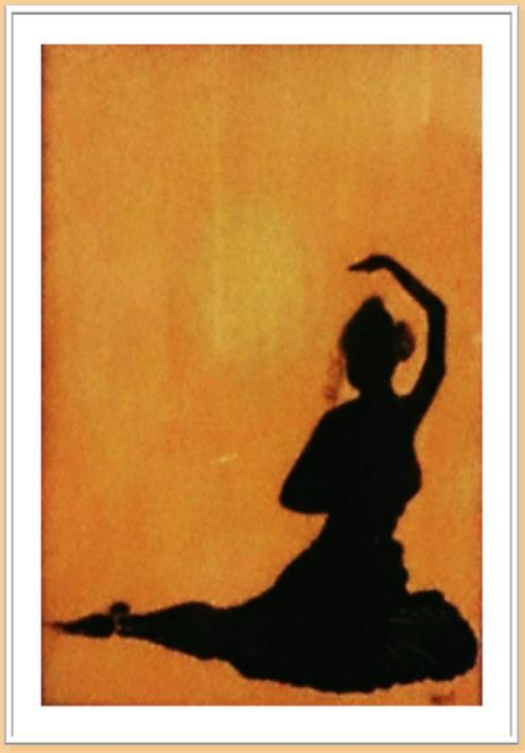

प्रतिछाया भी कुछ बोलती है

सेतु रॉय, वरिष्ठ परिचर सह भंडारक, सी सी आर आई

# चित्र चारुता

" कुछ लोग सूरज को पीली बिंदु बना देते हैं और कुछ लोग पीली बिंदुओं को सूरज बना देते हैं "

पाब्लो पिक्कासो

# कलाकार का जादू ! हाथों का कमाल है !

*भगवान है शांत ! कला है अनंत !*

*पवित्रता की देवी ! छटा अनोखी !*

*पेंसिल का है करिश्मा !बापू है महात्मा !*

नाट्य है मनोहर! कला है धरोहर!

चित्रकार- जोसफ़ मैथ्यू तैपरंबिल,
ई-कार्यालय, मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु

" साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात पशु के समान है "

# भाषा विविधा

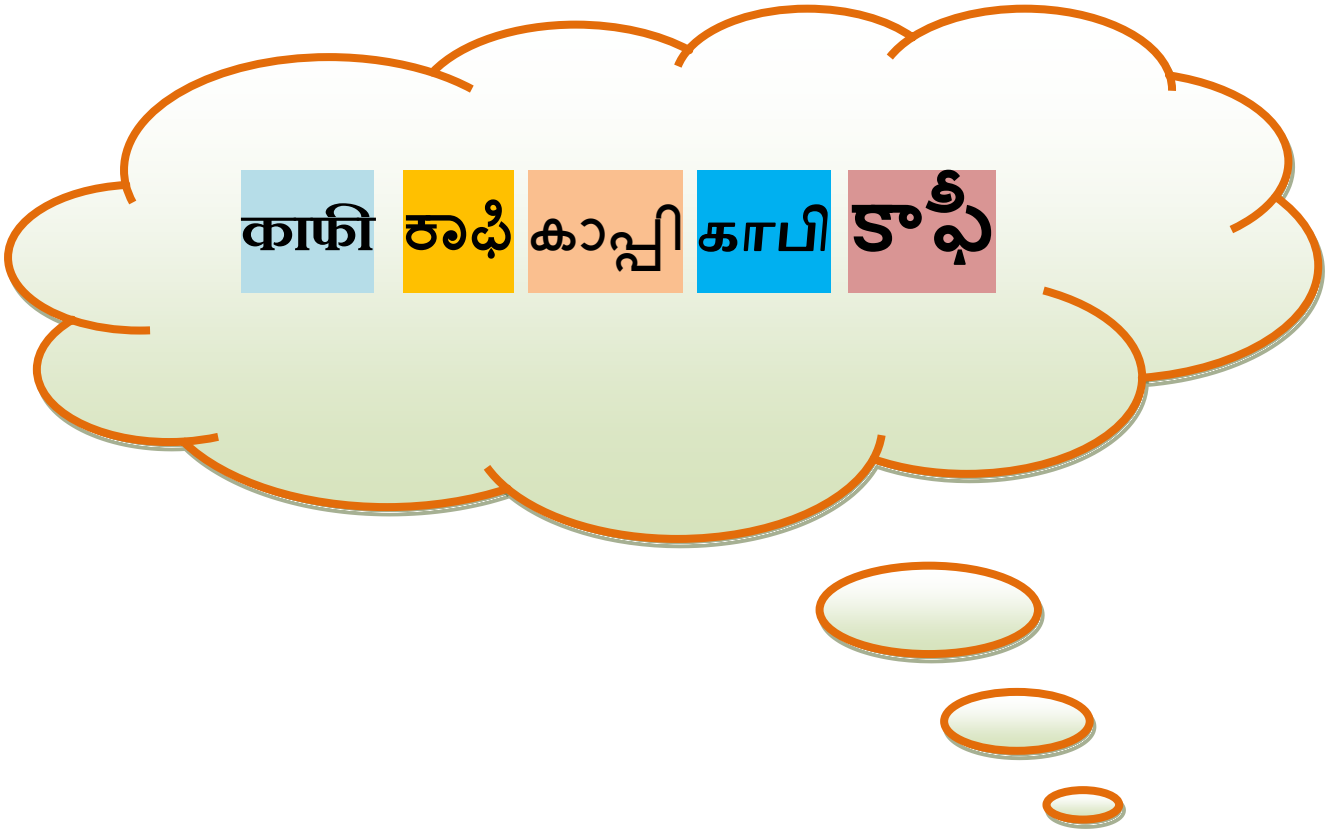


" भाषा में वह शक्ति है जो तलवार में नहीं है "

# वचनामृतम्

**न दुर्जन: साधुदशामुपैति बहुप्रकारैरपि शिष्यमाण: ।**
**आमूलसिक्त: पयसा धृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति॥**

अनेक प्रकार से समझाने व सिखाने पर भी दुर्जन कभी भी सज्जन नहीं बन सकता। दूध एवं घी से सींचने पर भी नीम का वृक्ष मीठा नहीं हो सकता।

**दुर्जनस्य व सर्पस्य वरम् सर्पो न दुर्जन: ।**
**सर्पा दंशन्ति काले तु दुर्जनस्तु पदे-पदे ॥**

दुर्जन व साँप, इन दोनों में से साँप अच्छा है, क्योंकि साँप समय आ जाने पर ही डसता है, लेकिन दुर्जन पग-पग पर कष्ट देता रहता है।

**यस्मिन देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवा: ।**
**न च विद्यागम: कश्चित तं देशम् परिवर्जयेत् ॥**

जिस देश में मान-सम्मान न हो, आजीविका के साधन न हो, न कोई संबंधी/रिश्तेदार न हों या किसी प्रकार की विद्या प्राप्ति की संभावना न हो, उस देश में नहीं रहना चाहिए।

**कान्तावियोग: स्वजनापमान: ऋणस्य शेषम् कुनृपस्य सेवा ।**
**दरिद्रभावो विषमा सभा च विनाग्निमेते प्रदहन्ति कायम् ॥**

पत्नी का वियोग, स्वजनों द्वारा अपमान, बचा हुआ ऋण, दुष्ट राजा की सेवा, दरिद्रता, विवेकहीन या स्वार्थियों की सभा आदि सब आग बिना ही शरीर को जलाते हैं।

**वृथा वृष्टि: समुद्रेषु वृथा तृप्तेषु भोजनम् ।**
**वृथा दानम् धनाढ्येषु वृथा दीपो दिवापि च ॥**

समुद्र में वर्षा होना, भोजन से तृप्त लोगों को भोजन देना, धनिकों को दान देना, दिन में दीपक जलाना आदि कार्य व्यर्थ, निष्फल व निष्प्रयोज्य होते हैं ।

**संस्कृत अधिकतर भारतीय एवं यूरोपीय भाषाओं की जननी है। ऐसा इसलिए है, इस भाषा को बनाया नहीं गया, बल्कि इस भाषा की खोज की गई तथा संवाद के माध्यम के अलावा इसके और भी मायने हैं। संस्कृत साहित्य के दो रूप प्रचलित हैं - वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत।**

| ಕುವೆಂಪು | ಕವಿಮನೆ, ಕುಪ್ಪಳಿ. ವಸ್ತು ಸಂಗ್ರಹಾಲಯ | 'ಉದಯರವಿ' |
|---|---|---|

**ಕುವೆಂಪು**, ಕುಪ್ಪಳಿ ವೆಂಕಟಪ್ಪ ಪುಟ್ಟಪ್ಪ (ಡಿಸೆಂಬರ್ 19, 1904 - ನವೆಂಬರ್ 11, 1994), ಅವರು ಕನ್ನಡದ ಅಗ್ರಮಾನ್ಯ ಕವಿ. ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ ಶತಮಾನ ಕಂಡ ದೈತ್ಯ ಪ್ರತಿಭೆ. ಕುವೆಂಪು ಅವರು ತಮ್ಮ ತಾಯಿಯ ತವರೂರಾದ ಚಿಕ್ಕಮಗಳೂರು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಕೊಪ್ಪ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಹಿರೇಕೊಡಿಗೆ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಡಿಸೆಂಬರ್ 29, 1904ರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದರು. ತಂದೆ ವೆಂಕಟಪ್ಪಗೌಡ; ತಾಯಿ ಸೀತಮ್ಮ. ಅವರ ಬಾಲ್ಯ ತಮ್ಮ ತಂದೆಯ ಊರಾದ ಶಿವಮೊಗ್ಗ ಜಿಲ್ಲೆಯ ತೀರ್ಥಹಳ್ಳಿ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಕುಪ್ಪಳಿಯಲ್ಲಿ ಕಳೆಯಿತು. ಕುವೆಂಪು ಅವರ ಆರಂಭಿಕ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಕೂಲಿಮಠದಲ್ಲಿ ಆಯಿತು. ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ ತೀರ್ಥಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯಿತು. ನಂತರ ಮೈಸೂರಿನ ವೆಸ್ಲಿಯನ್ ಮಿಷನ್ ಹೈಸ್ಕೂಲಿನಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಶಿಕ್ಷಣ ಮುಂದುವರಿಸಿದರು. ಮೈಸೂರಿನ ಮಹಾರಾಜ ಕಾಲೇಜಿನಿಂದ ಬಿ.ಎ. ಪದವಿಯನ್ನೂ, ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಎಂ.ಎ. ಪದವಿಯನ್ನೂ ಪಡೆದರು. ಟಿ.ಎಸ್.ವೆಂಕಣ್ಣಯ್ಯನವರು ಇವರಿಗೆ ಗುರುಗಳಾಗಿದ್ದರು.

ಕುವೆಂಪು ಅವರು ಮೈಸೂರಿನ ಮಹಾರಾಜ ಕಾಲೇಜಿನ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರೂ, ನಂತರ ಪ್ರಾಂಶುಪಾಲರೂ ಆಗಿದ್ದರು. ನಂತರ ಮೈಸೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯದ ಉಪಕುಲಪತಿಗಳಾದರು. ತಮ್ಮ ಕಲ್ಪನೆಯ ಕೂಸಾದ ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಬೆಳೆಸಿದರು. ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವನ್ನು ಅಧ್ಯಯನಾಂಗ, ಸಂಶೋಧನಾಂಗ ಹಾಗೂ ಪ್ರಸಾರಾಂಗ ಎಂಬುದಾಗಿ ವಿಭಾಗಿಸಿದರು. ಕಡಿಮೆ ಅವಧಿಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಬರೆಸಿ ಕನ್ನಡ ಮಾಧ್ಯಮದ ತರಗತಿಗಳನ್ನು ಆರಂಭಿಸಿದರು. ಕುವೆಂಪು ಅವರು ಹೇಮಾವತಿ ಅವರನ್ನು ವಿವಾಹವಾದರು. ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರ ತೇಜಸ್ವಿ, ಕೋಕಿಲೋದಯ ಚೈತ್ರ, ಇಂದುಕಲಾ ಹಾಗೂ ತಾರಿಣಿ ಅವರ ಮಕ್ಕಳು. ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರ ತೇಜಸ್ವಿ ಅವರು ಕನ್ನಡದ ಅಗ್ರಮಾನ್ಯ ಸಾಹಿತಿಗಳಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಕೋಕಿಲೋದಯ ಚೈತ್ರ ಅವರು ಇಂಜಿನಿಯರ್ ಆಗಿ ಆಸ್ಟ್ರೇಲಿಯಾದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿದ್ದಾರೆ. ಚಿದಾನಂದಗೌಡ ಅವರು ಕುವೆಂಪು ಅವರ ಅಳಿಯ.

ಕುವೆಂಪು ಅವರು ನವೆಂಬರ್ 11, 1994 ರಂದು ಮೈಸೂರಿನಲ್ಲಿ ನಿಧನರಾದರು. ತಮ್ಮ ಹುಟ್ಟೂರಾದ ಕುಪ್ಪಳಿಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಅಂತ್ಯಸಂಸ್ಕಾರವನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಲಾಯಿತು. ಕುಪ್ಪಳಿಯಲ್ಲಿರುವ ಅವರ ಸಮಾಧಿ ಒಂದು ಸ್ಮಾರಕವಾಗಿದೆ.

ವರಕವಿ ಬೇಂದ್ರೆಯವರಿಂದ ***'ಯುಗದ ಕವಿ ಜಗದ ಕವಿ'*** ಎನಿಸಿಕೊಂಡವರು. ವಿಶ್ವಮಾನವ ಸಂದೇಶ ನೀಡಿದವರು. ಕನ್ನಡದ ಎರಡನೆಯ 'ರಾಷ್ಟ್ರಕವಿ. ಜ್ಞಾನಪೀಠ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಮತ್ತು ಕೇಂದ್ರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಅಕಾಡೆಮಿ ಪ್ರಶಸ್ತಿಯನ್ನು ಮೊದಲ ಬಾರಿಗೆ ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ತಂದುಕೊಟ್ಟವರು. ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ ನೀಡುವ ಕರ್ನಾಟಕ ರತ್ನ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಹಾಗೂ ಪಂಪ ಪ್ರಶಸ್ತಿಗಳನ್ನು ಮೊದಲ ಬಾರಿಗೆ ಪಡೆದವರು. ಮೈಸೂರಿನ 'ಮಹಾರಾಜಾ' ಕಾಲೇಜಿನಲ್ಲಿ ಓದಿದ ಇವರು, ಮೈಸೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಸೇವೆ ಸಲ್ಲಿಸಿ ಉಪ ಕುಲಪತಿಯಾಗಿ ನಿವೃತ್ತರಾದರು. ಇವರು ಮೈಸೂರಿನ ಒಂಟಿಕೊಪ್ಪಲಿನಲ್ಲಿರುವ "ಉದಯರವಿ"ಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದರು.ಕುವೆಂಪು ಅವರು 20ನೆಯ ಶತಮಾನ ಕಂಡ ದೈತ್ಯ ಪ್ರತಿಭೆ. ಅವರೊಬ್ಬ ರಸಋಷಿ.

ತಮ್ಮ ಮೇರು ಕೃತಿ 'ಶ್ರೀ ರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ' ನಲ್ಲಿ(1949) ಈ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಅಗತ್ಯವಾದ ದರ್ಶನವನ್ನು ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಎರಡು ಬೃಹತ್ ಕಾದಂಬರಿಗಳಾದ 'ಕಾನೂರು ಹೆಗ್ಗಡತಿ'(1936) ಹಾಗೂ 'ಮಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಮದುಮಗಳು'(1967) ಅವರನ್ನು ಜಗತ್ತಿನ ಮಹಾನ್ ಕಾದಂಬರಿಕಾರರ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲುವಂತೆ ಮಾಡಿವೆ.

ಅವರ ರಚನೆಗಳಾದ ಖಂಡಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಾಂಗದಾ (1936) **ಕವನ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ** ಪಾಂಚಜನ್ಯ (1933) ಕೋಗಿಲೆ ಮತ್ತು ಸೋವಿಯಟ್ ರಷ್ಯಾ (1944) ಪಕ್ಷಿಕಾಶಿ (1946) ಇಕ್ಷುಗಂಗೋತ್ರಿ (1957) ಅನಿಕೇತನ (1963) ಕೊನೆಯ ತೆನೆ ಮತ್ತು ವಿಶ್ವಮಾನವ ಸಂದೇಶ (1981) ಮುಂತಾದವುಗಳು ಸ್ವಾರಸ್ಯಕರವಾದುದು.

ಅವರ ನಾಟಕಗಳಿಗೆ ವೈಚಾರಿಕತೆಯ ಸ್ಪರ್ಶವಿದೆ. ಯಮನ ಸೋಲು (1928), ಸ್ಮಶಾನ ಕುರುಕ್ಷೇತ್ರಂ (1931), ರಕ್ತಾಕ್ಷಿ (1933), ಶೂದ್ರ ತಪಸ್ವಿ (1944), ಬೆರಳ್‌ಗೆ ಕೊರಳ್ (1947), ಮುಂತಾದವುಗಳು ಪ್ರಮುಖವೆನಿಸಿವೆ.

*ಇದಲ್ಲದೆ ನೆನಪಿನ ದೋಣಿಯಲ್ಲಿ:ಕುವೆಂಪು ಮದುವೆ ಪ್ರಸಂಗ* ಎಂಬ ಆತ್ಮಕಥೆ, ಜೀವನ ಚರಿತ್ರೆಗಳಾದ *ಸ್ವಾಮಿ ವಿವೇಕಾನಂದ, ರಾಮಕೃಷ್ಣ ಪರಮಹಂಸ*,ವಿಮರ್ಶೆಗಳು, ಅನುವಾದಗಳು ಭಾಷಣ-ಲೇಖನ ಶಿಶು ಸಾಹಿತ್ಯ ಇತರೆ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಶ್ರೀಮಂತವಾಗಿಸಿದ್ದಾರೆ.

**ಆಯ್ದ ಸಂಕಲನಗಳು:**ಕನ್ನಡ ಡಿಂಡಿಮ (1968) ಕಬ್ಬಿಗನ ಕೈಬುಟ್ಟಿ (1973) ಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಗೀತಾಂಜಲಿ (1972) ಕೂಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಭಂಡಾರವನ್ನು ತುಂಬಿಸುತ್ತದೆ.

**ವಿಶ್ವ ಮಾನವ ದಿನ**

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರವು 2014 ರ ಡಿಸೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಕುವೆಂಪು ಜನ್ಮದಿನವಾದ ಡಿಸೆಂಬರ್19 ಅನ್ನು "ವಿಶ್ವ ಮಾನವ" ದಿನವನ್ನಾಗಿ ಆಚರಿಸುವುದಾಗಿ ಆದೇಶ ಹೊರಡಿಸಿತು. ಈ ಮೂಲಕ ವಿಶ್ವಮಾನವ ಸಂದೇಶ ಸಾರಿದ ಕವಿಗೆ ಮತ್ತೊಂದು ಗೌರವ ಸಂದಾಯವಾದಂತಾಯ್ತು.

**ಜ್ಞಾನಪೀಠ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಉಲ್ಲೇಖ**

ಕುವೆಂಪು ಅವರು ಸಾಹಿತ್ಯ ಬೃಹನ್ಮೂರ್ತಿ; ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸೆಯ ಯಾವೂಂದು ಸರಳ ಸೂತ್ರವೂ ಅವರನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ವಿವರಿಸಲಾರದು - ಏಕೆಂದರೆ, ಅವರ ಕೃತಿಗಳು ನಗ್ನ ಸತ್ಯವನೆಂತೊ ಅಂತೇ ಅತೀತ ಸತ್ಯವನ್ನೂ ಅನಾವರಣ ಗೊಳಿಸುತ್ತವೆ. ಸೃಜನಾತ್ಮಕ ಜೀವನಚರಿತ್ರೆ, ಸಾಹಿತ್ಯ ವಿಮರ್ಶೆ, ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸೆ, ನಾಟಕ ಮತ್ತು ಕತೆ ಕಾದಂಬರಿಯ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳಿಗೆ ಪುಟ್ಟಪ್ಪನವರ ಕೊಡುಗೆ ಸ್ಮರಣೀಯವಾದುದು. ಅವರದು ವ್ಯಷ್ಠಿ ವಾಣಿಯಲ್ಲ; ಯುಗಧರ್ಮ, ಜನಾಂಗ ಧರ್ಮಗಳ ವಾಣಿ. ಅವರು ಬಹುಕಾಲ ತಮ್ಮ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಮೂಲಕ ಚಿರಂಜೀವಿಯಾಗಿ ಇರುತ್ತಾರೆ.

**ಅಧ್ಯಕ್ಷತೆ, ಇತ್ಯಾದಿ**

1928ರಲ್ಲಿ ಸೆಂಟ್ರಲ್ ಕಾಲೇಜು ಕರ್ನಾಟಕ ಸಂಘದ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಕವಿ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಅಧ್ಯಕ್ಷರಾಗಿದ್ದರು.ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಕವಿಗೋಷ್ಠಿಯ ಅಧ್ಯಕ್ಷರಾಗಿದ್ದರು.1957ರಲ್ಲಿ ನಡೆದ 39ನೆಯ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಅಧ್ಯಕ್ಷರಾಗಿದ್ದರು.

ಕುಪ್ಪಳಿಯಲ್ಲಿರುವ ಕುವೆಂಪು ಅವರು ಹುಟ್ಟಿದ ಮನೆ ವಸ್ತು ಸಂಗ್ರಹಾಲಯವಾಗಿದೆ.ಅಲ್ಲೇ ಇರುವ ಅವರ ಸಮಾಧಿ ಸ್ಥಳ ಒಂದು ವಿಶಿಷ್ಟ ಸ್ಮಾರಕ.ಶಿವಮೊಗ್ಗದ ಬಳಿ ಇರುವ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯಕ್ಕೆ ಕುವೆಂಪು ಅವರ ಹೆಸರಿಡಲಾಗಿದೆ.ಮೈಸೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯದಲ್ಲಿರುವ ಕನ್ನಡ ಅಧ್ಯಯನ ಸಂಸ್ಥೆಗೆ ಕುವೆಂಪು ಅವರ ಹೆಸರಿಡಲಾಗಿದೆ.ಅನುವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸಲು ಬೆಂಗಳೂರಿನಲ್ಲಿ ಸ್ಥಾಪಿಸಲಾಗಿರುವ ಭಾಷಾ ಭಾರತಿ ಸಂಸ್ಥೆಗೆ ಕುವೆಂಪು ಅವರ ಹೆಸರಿಡಲಾಗಿದೆ.ಮೈಸೂರಿನ ಕುವೆಂಪು ನಗರದಲ್ಲಿರುವ ರಸ್ತೆಗಳಿಗೆ ಕುವೆಂಪು ಅವರ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳ, ಪಾತ್ರಗಳ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಇಡಲಾಗಿದೆ.

**कुप्पल्ली वेंकटप्पा गौड़ा पुट्टप्पा** : (29 दिसंबर 1904 – 11 नवंबर 1994) कुवेम्पु कन्नड़ के प्रसिद्ध लेखक एवं कवि थे, जिन्हें बीसवीं शताब्दी के महानतम कन्नड़ कवि की उपाधि दी गई है। ये कन्नड़ भाषा में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले सात व्यक्तियों में प्रथम थे। पुट्टप्पा ने सभी साहित्यिक कार्य उपनाम 'कुवेम्पु' से किये हैं। उनको साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1954 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

# മോഹം - ഒ. എൻ. വി

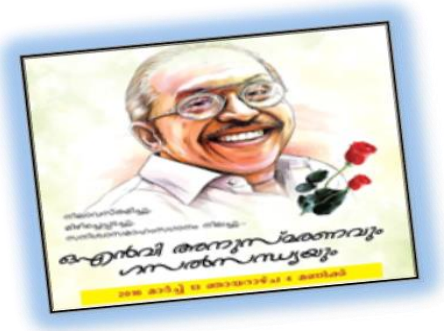

ഒരു വട്ടം കൂടിയെൻഓർമ്മകൾമേയുന്ന
തിരുമുറ്റത്തെത്തുവാൻമോഹം
തിരുമുറ്റത്തൊരു കോണിൽനിൽക്കുന്നൊരാ
നെല്ലി മരമൊന്നുലുത്തുവാൻമോഹം
മരമൊന്നുലുത്തുവാൻ മോഹം
അടരുന്ന കായ്മണികൾപൊഴിയുമ്പോൾ
ചെന്നെടുത്ത്അതിലൊന്ന് തിന്നുവാൻമോഹം
സുഖമെഴും കയ്പ്പും പുളിപ്പും മധുരവും
നുകരുവാനിപ്പോഴും മോഹം

തൊടിയിലെ കിണർവെള്ളം കോരി
കുടിച്ചെന്ത് മധുരം എന്നോതുവാൻമോഹം
എന്ത് മധുരമെന്നോതുവാൻമോഹം
ഒരു വട്ടം കൂടി കൂടിയാ പുഴയുടെ തീരത്ത്
വെറുതെയിരിക്കുവാൻമോഹം

വെറുതെയിരിന്നൊരു കുയിലിന്റെ
പാട്ടു കേട്ടെതിർപ്പാട്ടു പാടുവാൻമോഹം
അത് കേൾക്കെ ഉച്ചത്തിൽകൂകും കുയിലിന്റെ
ശ്രുതി പിന്തുടരുവാൻമോഹം
ഒടുവിൽപിണങ്ങി പറന്നു പോം പക്ഷിയോട്
അരുതേ എന്നോതുവാൻമോഹം

വെറുതെയീ മോഹങ്ങളെന്നറിയുമ്പോഴും
വെറുതെ മോഹിക്കുവാൻമോഹം

2007 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मनित मलयालम के विख्यात कवि श्री ओ एन वी कुरुप्प की कविता 'मोहम' (आशाएँ) मलयालम लिपि में ऊपर प्रस्तुत है।

15 वीं सदी में मलयालम साहित्य के प्रारंभ होने का प्रमाण प्राप्त हुआ है। साहित्य का प्रारंभ मालयालम भाषा के पिता तुंजत्त रामानुजन एषुत्तच्चन के अध्यात्मा रामायणम से हुआ है। 1965 मलयालम का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार जी. शंकर कुरुप्प के 'ओडक्कुषल' (बाँसुरी) को प्राप्त हुआ था, जो भारत का भी प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार था।

# திருக்குறள்
## திருவள்ளுவர்

திருக்குறள் உலகப்புகழ் பெற்ற தமிழ் இலக்கியமாகும். இதனை இயற்றியவர் திருவள்ளுவர் என்று அறியப்படுபவர். இதில் 1330 குறள்கள் பத்து பத்தாக 133 அதிகாரங்களின் கீழ் தொகுக்கப் பெற்றுள்ளன. திருக்குறள் சங்க இலக்கிய வகைப்பாட்டில் பதினெண்கீழ்க்கணக்கு எனப்படும் பதினெட்டு நூல்களின் திரட்டில் இருக்கிறது. இது அடிப்படையில் ஒரு வாழ்வியல் நூல். மாந்தர்கள் தம் அகவாழ்விலும் சுமுகமாக கூடி வாழவும், புற வாழ்விலும் இன்பமுடனும் இசைவுடனும் நலமுடனும் வாழவும் தேவையான அடிப்படைப் பண்புகளை விளக்குகிறது. இந்நூல் அறம், பொருள், இன்பம் அல்லது காமம் என்னும் முப்பெரும் பிரிவுகளாய் (முப்பால்) பிரித்தும் அழகுடன் இணைத்தும் கோர்த்தும் விளக்குகிறது.

வாழ்வியலின் எல்லா அங்கங்களையும் திருக்குறள் கூறுவதால், அதைச் சிறப்பித்துப் பல பெயர்களால் அழைப்பர்: திருக்குறள், முப்பால், உத்தரவேதம், தெய்வநூல், பொதுமறை, பொய்யாமொழி, வாயுறை வாழ்த்து, தமிழ் மறை, திருவள்ளுவம் என்ற பெயர்கள் அதற்குரியவை. கருத்துக்களை இன, மொழி, பாலின பேதங்களின்றி காலம் கடந்தும் பொருந்துவது போல் கூறி உள்ளதால் இந்நூல் "உலகப் பொது மறை" என்றும் அழைக்கப்படுகிறது

திருக்குறள் - இதற்குப் பலர் உரை எழுதியுள்ளனர். அவற்றில் புகழ் வாய்ந்ததாக விளங்குவதும் அதிகமாகப் பயன்படுத்தப்பட்டதும் பரிமேலழகர் உரைதான். தற்காலத்திலும் பலர் உரை எழுதியுள்ளனர்.

ऊपर तिरुक्कुरल के बारे मे विवरण दिया गया है जो तमिल भाषा में लिखित एक प्राचीन मुक्तक काव्य रचना है। तिरुवल्लुवर इसके रचयिता थे। इसकी रचना का काल ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर ईसा की छठवीं शताब्दी तक माना जाता है। इसके सूत्र या पद्य, जीवन के हर पहलू को स्पर्श करते हैं। यह नीतिशास्त्र की महान रचना है। तिरुक्कुरल के तीन भाग हैं- धर्म, अर्थ और काम। उनमें क्रमशः 38, 70 और 25 अध्याय हैं। हर एक अध्याय में 10 'कुरल' के हिसाब से समूचे ग्रंथ में 1330 'कुरल' हैं। यह मुक्तक काव्य होने पर भी विषयों के प्रतिपादन में एक क्रम-बद्धता है और विषयों की व्यापकता विषय-सूची को देखने से ही ज्ञात हो सकती है। जबकि धर्म-कांड में ईश्वर-स्तुति, गार्हस्थ्य, संन्यास, अध्यात्म, नियति का बल आदि व्यक्तिगत आचारों और व्यवहारों पर विचार किया है, अर्थ-कांड में राजनीति के अलावा, जिसके अंतर्गत सासकों का आदर्श, मंत्रियों का कर्तव्य, राज्य की अर्थ-व्यवस्था, सैन्य आदि आते हैं, सामाजिक जीवन की सारी बातों पर विचार किया गया है। फिर काम-कांड की तो क्या पूछना? संयोग और विप्रलंब शृंगार की ऐसी हृदयग्राही छटा अन्यत्र दुर्लभ है।

# మా తెలుగు తల్లికి

మా తెలుగు తల్లికి మల్లెపూదండ
మా కన్నతల్లికి మంగళారతులు,
కడుపులో బంగారు కనుచూపులో కరుణ,
చిరునవ్వులో సిరులు దొరలించు మాతల్లి.

గలగలా గోదారి కదలిపోతుంటేను
బిరాబిరా క్రిష్ణమ్మ పరుగులిడుతుంటేను
బంగారు పంటలే పండుతాయీ
మురిపాల ముత్యాలు దొరులుతాయి.

అమరావతి నగర అపురూప శిల్పాలు
త్యాగయ్య గొంతులో తారాడు నాదాలు
తిక్కయ్య కలములో తియ్యందనాలు
నిత్యమై నిఖిలమై నిలచి వుండేదాకా
రుద్రమ్మ భుజశక్తి మల్లమ్మ పతిభక్తి
తిమ్మరసు ధీయుక్తి, కృష్ణరాయల కీర్తి
మా చెవులు రింగుమని మారుమ్రోగేదాక
నీపాటలే పాడుతాం, నీ ఆటలే ఆడుతాం
జై తెలుగు తల్లి, జై తెలుగు తల్లి.

ऊपर आंध्रप्रदेश का राज्य गीत मा तेलुगु तल्लिकि (मेरी माता तेलुगु) तेलुगु लिपि में दी गई है। इस गीत की रचना श्री शंकरंबाडी सुंदराचारी ने की थी तथा संगीत तंगुतुरी सूर्यकुमारी ने किया था। तेलुगु भाषा का साहित्य सन 1030 में नन्नय्या के महाभारतम के साथ प्रारंभ हुआ था, जिसे संस्कृत महाभारतम का भाषा रूपांतरण माना जाता था। कंडुकुरि वीरेश लिंगम को आधुनिक तेलुगु साहित्य के पिता माने जाते हैं। सन 1971 में तेलुगु साहित्य का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार श्री विश्वनाथ स्त्यनारायणा को 'रामायण कल्पवृक्ष' के लिए प्राप्त हुआ था।

# कॉफ़ी के दस स्वास्थ्यवर्धक लाभ

कॉफ़ी बोर्ड, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, बेंगलूरु - 560 001. Website: www.indiacoffee.org